मई 2023

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

शंका से पूरा जगत् फँसा हुआ है,
जो 'व्यवस्थित' है, उसे कोई बदल नहीं सकता।
अत: किसी भी प्रकार की शंका उत्पन्न हो,
उसे बीज में से उखाड़कर फेंक देनी चाहिए।

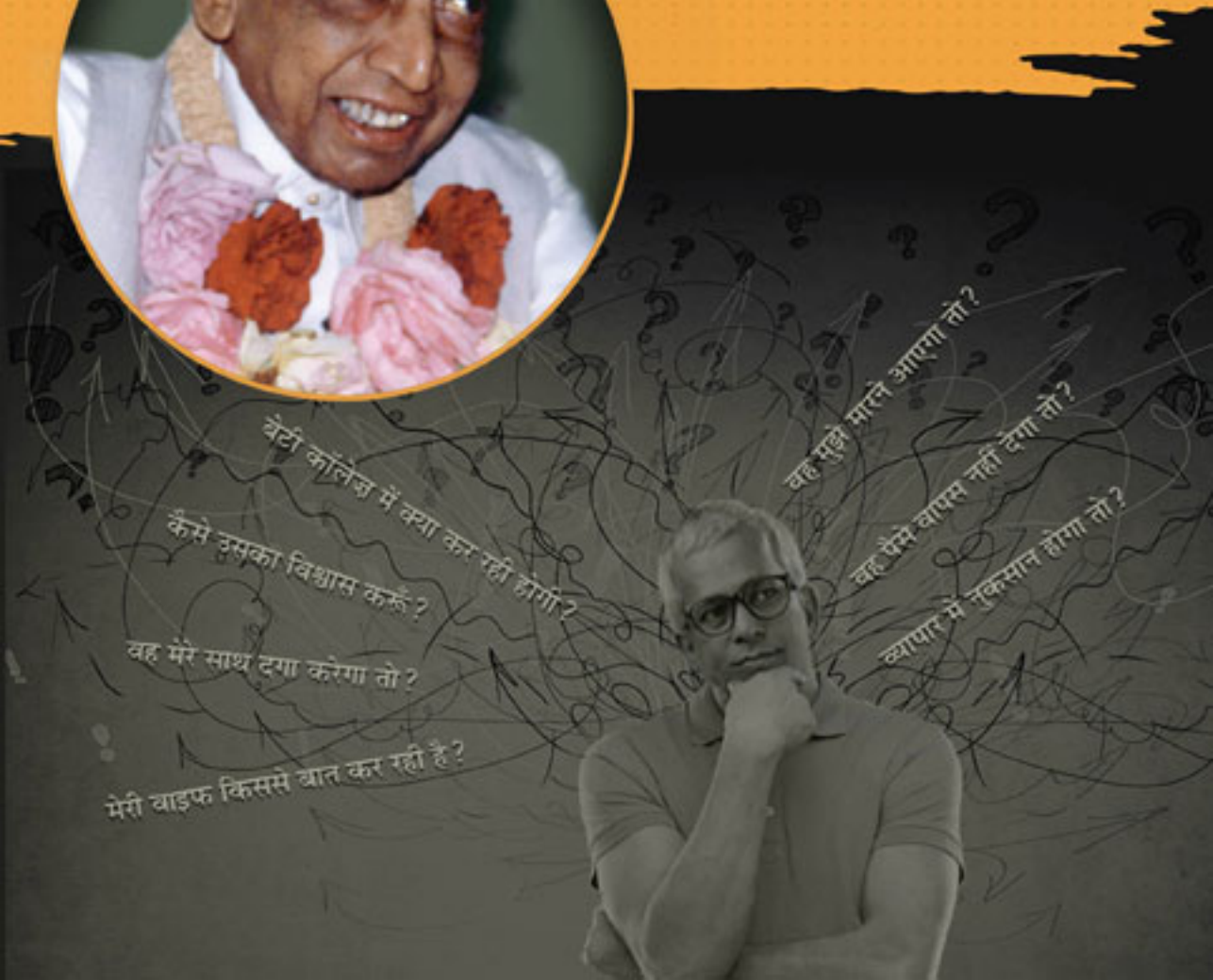

अडालज : पूज्य नीरुमाँ की 17वीं पुण्यतिथि : ता. 19 मार्च 2023

वर्ष : 18 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 211
मई 2023
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2023
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

मोक्षमार्ग में बाधक कारण : शंका

संपादकीय

अनंत जन्मों से संसार में मार खा-खाकर अंत में मोक्ष में जाने के लिए जीव प्रयत्नशील रहा है। कितनी ही बार चढ़ता है और कितनी ही बार गिरता है। इच्छित परिणाम आने से रोकता कौन है? मोक्ष की साधना करने वाला साधक 'साधक कारणों' को कुछ अंश तक प्राप्त कर सकता है, किन्तु 'बाधक कारणों' उसकी दृष्टि में नहीं आते हैं। मोक्षमार्ग में चढ़ने के रास्ते का जितना महत्व है, उससे अनेक गुना महत्व है फिसलाने वाले संयोगों के प्रति जागरूकता का और उस जागरूकता के बगैर चाहे जितना भी पुरुषार्थ करे तब भी वह गिरता ही रहेगा। प्रस्तुत अंक में, मोक्षमार्ग के अनेक बाधक कारणों में से व्यवहार में होने वाली 'शंका के स्वरूप' का और उसके जोखिमों का विश्लेषण हुआ है।

शंका, वह एक प्रकार का अहंकार है, खुद की निर्बलता है। शंका का रूट कॉज़ क्या है? एक्स्ट्रा (अत्यधिक) बुद्धि, जो बहुत पर्याय दिखाती है, फिर उलझाती है और वे सोल्व (हल) नहीं होते, उससे शंका उत्पन्न होती है। शंका से भय उत्पन्न होता है और भय से शंका होती है, दोनों कारण-कार्य जैसे हैं। जहाँ मेरापन, ममता, आसक्ति, पज़ेसिवनेस है, वहाँ शंका उत्पन्न होती है। जब दुःख भुगतने की शुरुआत होती है, वहाँ शंका उत्पन्न होती है।

शंका के लक्षणों में ज़रूरत से ज़्यादा जाँच-पड़ताल, खोजबीन, मन में सतत विचार कि क्या होगा? वाइफ किसी और के साथ घूमती होगी तो? पति की दूसरी पत्नी होगी तो? बेटी का चक्कर होगा तो? ऐसी सभी शंकाओं की वजह से फिर निरंतर भय, बेचैनी, छटपटाहट का अनुभव होता है। कलियुग के प्रभाव में पति-पत्नी के बीच की मोरालिटी टूट गई, सिन्सियारिटी टूट गई, पति-पत्नी एक-दूसरे के नहीं होते। सिर्फ *कपट* और दग़ाखोरी में ही वृत्तियाँ बहती रहती हैं, वहाँ कैसा सुख भोगना? क्या एक विषय का लालच ही शंका को जन्म देता है? ये शंकाएँ तो अनंत जन्म बिगाड़ देती है! आँखों से देखा हुआ भी गलत साबित होता है, ऐसे जगत् में क्या शंका करना? किसी के चारित्र के संबंध में शंका करना, वह तो भयंकर जोखिम है।

बेटियाँ कॉलेज में जाएँ और माँ-बाप को उनके चारित्र पर शंका हो तो क्या होगा? दुःख का ही उपार्जन होगा। घर में प्रेम नहीं मिलता, इसलिए बच्चे प्रेम ढूँढने बाहर जाते हैं और फिसल जाते हैं। माँ-बाप मित्र के जैसे प्रेमपूर्वक रहें तो इस परिणाम को टाल सकते हैं। लेकिन फिर भी बेटी के कदम गलत रास्ते पर चले गए हों तो उसे घर में से निकाल नहीं सकते, उसे प्रेमपूर्वक सहारा देकर नुकसान को समेट लेना ही पड़ेगा!

ज्ञानी पुरुष अर्थात् पूर्ण प्रकाश! उन्होंने संपूर्ण मोक्षमार्ग देखा, जाना, अनुभव किया और जगत् कल्याण के लिए हमें प्रबोधित किया है। इस ज्ञान प्रकाश से महात्माओं को 'शंका' नामक संक्रामक रोग का स्वरूप और उसके जोखिम समझ में आए, भीतर के दोष पकड़ में आए और ज्ञान की समझ से इससे छूटकर मोक्षमार्ग में प्रगति करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

मोक्षमार्ग में बाधक कारण : शंका

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सही-गलत का मिक्स्चर ही है 'वहम'

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के मन में जो वहम आता है, वह क्या है?

दादाश्री : वहम का अर्थ ही यह है कि सही-गलत का मिक्स्चर। कहाँ से आता है? किसी जगह से 'एक्सपोर्ट' (निर्यात) होना चाहिए न? तभी अपने यहाँ 'इम्पोर्ट' (आयात) होगा न।

किसी व्यक्ति ने दिन में भूत की बात सुन ली हो कि फलाने भाई को भूत लग गया है। उसकी पत्नी मायके गई हुई हो, और वे भाई रूम में अकेले सो गए। सो जाने के बाद फिर रसोईघर में चूहे ने कोई प्याला खड़खड़ाया होगा! रात को बारह बजे प्याला खड़का और उस भाई ने आवाज़ सुनी। दिन में उसने भूत की बात सुनी थी, वह 'एविडेन्स' (संयोग) इसमें मिल गया, इसलिए उसके मन में हुआ कि, 'कुछ है, इतना बड़ा प्याला किसने गिराया?' यानी जब तक उसका पता नहीं चलेगा, तब तक उसका वहम जाएगा नहीं।

यह जो ज्ञान मिला है, जब तक उसके विरुद्ध में दूसरा ज्ञान नहीं मिल जाता, तब तक ये भाई ऐसे के ऐसे ही रहते हैं और वहीं सुबह पाँच बजे कोई 'फ्रेन्ड' आए कि, 'चंदूभाई उठिए'। तब चंदूभाई को हिम्मत आ जाती है। क्या कहेंगे, कि 'मैं तो आज घबरा गया था'। उनका 'फ्रेन्ड' कहे कि 'अंदर देखो तो सही, क्या है'? फिर जब देखता है तब पता चलता है कि यह तो चूहे ने गिरा दिया था, यह डिब्बा गिरा दिया था, यह प्याला गिरा दिया था, यह गिरा दिया वगैरह। यानी जो वहम घुसा हुआ था, वह निकल जाता है। यानी यह तो समझ बदलने के कारण नींद नहीं आती न। प्याला चूहे ने खड़खड़ाया लेकिन भूत का वहम घुस गया था। अत: वैसी समझ के कारण नींद नहीं आती है न। लेकिन जब वह वहम निकल जाए, खुद के पास ऐसी दवाई हो, तो पूरी रात नींद आएगी न? उससे मनुष्य सुखी हो जाएगा। थोड़ा-बहुत भी समझे, तो वह सुखी हो जाएगा!

परमाणुओं के अनुसार 'वहम-शंका'

इस हिन्दुस्तान की प्रजा वहम से, शंका से, डर से मरी हुई प्रजा है। दुनिया में किसी भी प्रकार का वहम रखने जैसा नहीं है। वहम हेल्पिंग प्रोब्लेम नहीं (परेशानी में मदद नहीं करता) है। वहम नुकसानदायक प्रोब्लेम है।

अनंत प्रकार के ज्ञान हैं उन पर अनंत प्रकार के आवरण आते हैं इसलिए अनंत वहम उत्पन्न होते हैं। अत: वहम होना, वह अंदर भरा हुआ माल है। जो वहमी है न, वह स्त्रीत्व माना जाता है। क्योंकि हर एक मनुष्य में ये तीन प्रकार के परमाणु होते हैं। एक स्त्री के परमाणु होते हैं, पुरुष के परमाणु होते हैं और नपुंसक के परमाणु। इन तीनों प्रकार के परमाणुओं से यह शरीर बना

हुआ है। उनमें से पुरुष के परमाणु अधिक होने से पुरुष के रूप में जन्म होता है। स्त्री के परमाणु अधिक हों तो स्त्री और नपुंसक के परमाणु अधिक हों तो वैसा हो जाता है। ये तीनों ही प्रकार के परमाणु अंदर कम-ज़्यादा अनुपात में हैं ही। ये वहम, संदेह, शंका ये सब स्त्री के परमाणु हैं। उनसे हमें कहना है, 'हम पुरुष (आत्मा) हैं, तू गेट आउट'! मुझमें ऐसे परमाणु नहीं हैं।

आपको वहम हुआ, शंका हुई, वह आपको रात में सोने नहीं देगी। और इस भाई ने मेरा बिगाड़ दिया, ऐसी शंका हुई तो वह आपको शांति से बैठने नहीं देगी।

यह एक चीज़ सीख लो, कि इस जगत् में शंका रखने जैसी है ही नहीं।

'शंका-वहम' के अहंकार से दुःख

शंका करना, वह अहंकार है, एक प्रकार का। संशय, संदेह करना, शंका करना, वह संदेह से लेकर शंका तक के सभी लक्षण आत्मघाती हैं। उसमें फायदा नहीं होता, भयंकर नुकसान ही होता रहता है।

आत्मघाती यानी कि उसे खत्म ही कर दे! मरता नहीं है लेकिन मरे हुए के जैसा जीवित रहता है, बेचारा। यानी भीतर चाहे जैसी भी शंका हो, पत्नी के बारे में, बेटियों के बारे में, अन्य के बारे में, पड़ोसी के बारे में, चाहे जैसी भी शंका हो तो हमें सौंप देना, कि दादा यह आपको सौंप दिया। और आपको आराम से सो जाना है। नहीं तो भी आप कुछ कर नहीं पाओगे, बल्कि शंका में आप मारे जाओगे। उसके बजाय हमें सौंप दोगे तो हल आ जाएगा।

हम शंका करने के लिए मना करते हैं। कोई भी शंका मत करना। यदि उत्पन्न हुई, वास्तव में ऐसा हो जाए तब भी शंका करने से आपको कुछ नहीं मिलेगा और मारे जाओगे, वह एक प्रकार का अहंकार है। मेरी बात समझ में आई? सभी चीज़ों पर वहम हुआ है लेकिन अहंकार पर कभी वहम नहीं हुआ।

बहीखाता देखना नहीं आए तो वहम होता है और वहम होने से दुःख होता है। होता है साठ लाख का फायदा और दिखाई देता है चालीस लाख का नुकसान। फिर उसे दुःख ही होता रहेगा न, जब तक बहीखाता देखना न आए तब तक? ऐसा है यह जगत्। देखना नहीं आया उसी का यह दुःख है। नहीं तो दुःख है ही नहीं इस जगत् में।

जिसे वहम होता है, उसका पूरा निकंदन निकल जाता है। वहम, वह 'टिमिडनेस' (कायरता) है। सारा जगत् 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है, वहाँ वहम क्यों? तू पूरे ब्रह्मांड का मालिक है, उसका प्रमाण 'मैं' देने के लिए तैयार हूँ।

शंका-कुशंका-आशंका

प्रश्नकर्ता : शंका, कुशंका, आशंका के बारे में समझाइए।

दादाश्री : बेटी बड़ी हो जाए, तब बाप यदि बुद्धिशाली हो और मोही कम हो न, तो उसे समझ में आ जाता है कि इसके प्रति शंका रखनी ही पड़ेगी, अब शंका की नज़र से देखना पड़ेगा। वास्तव में जाग्रत मनुष्य तो जाग्रत ही रहेगा न। अब अगर शंका की नज़र से देखना हो तो एक दिन शंका की नज़र से देखे, लेकिन क्या रोज़ शंका से देखना है? और दूसरे दिन शंका की नज़र से देखे, तो वह सब आशंका कहलाती है।

कोई 'एन्ड' है या नहीं है? तूने जिस दृष्टि से देखा, उसका 'एन्ड' तो होना चाहिए न? उसे फिर आशंका कहते हैं। अब कुशंका कब होती है? किसी लड़के के साथ घूम रही हो, तब मन में तरह-तरह की कुशंकाएँ करता है। अब ऐसा हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता। मनुष्य ऐसी सब शंकाएँ करता रहता है और दुःखी होता है। संसार में दुःख यानी क्या? तो, कुशंका से खड़े हुए दुःख।

शंका करने लायक यह जगत् है ही नहीं, जागृति रखने लायक जगत् है। शंका अर्थात् तो खुद ही दुःख मोल लेना। वह कीड़ा फिर खाता ही रहता है उसे, रात-दिन खाता ही रहता है। जागृति रखने की ज़रूरत है। अपने हाथ में कुछ है नहीं और हाय-हाय करते रहते हैं, उसका क्या अर्थ है? यदि तुझे समझ में आता है तो बेटियों का पढ़ना बंद किया जा सकता है। तब फिर कहेगा, 'पढ़ाऊँगा नहीं तो कौन स्वीकार करेगा उसे?' अरे, तब यह भी नहीं करता और वह भी नहीं करता। एक तरफ रह न! नहीं तो उस लड़की के साथ घूमता रह रात-दिन! वह 'कॉलेज' में जाए तो साथ-साथ जा और बैठ वहाँ पर। वहाँ पर 'सर' पूछें कि, 'साथ में क्यों आए हो?' तब कहना, 'भाई, इसलिए कि मुझे शंका रहती है न, साथ रहूँगा तो शंका नहीं रहेगी न'! तब लोग तो उसे 'घनचक्कर' कहेंगे। अरे, उसकी बेटियाँ भी कहेगी न, कि 'पागल हैं ज़रा'!

इसलिए बेटियों पर शंका करने को मना करता हूँ और लोग बेटी पर शंका करें, ऐसे हैं भी नहीं। उन्हें ऐसी शंका नहीं रहती। उन्हें तो, सात बेटियाँ हों, तब भी कुछ नहीं। राम तेरी माया! उन्हें तो दूसरी प्रकार की शंका होती है कि, 'हमारे पार्टनर रोज़ लगभग पाँच सौ-हज़ार रुपये घर ले जाते हैं'। उसे ऐसी शंका रहती है। पैसों के प्रति उसे प्रियता है न! यानी हमारे पार्टनर पैसे ले जाते हैं, उसे ऐसी शंका रहती है। एक ही दिन वैसी शंका की, तो वह शंका कहलाती है और बार-बार शंका करे, तो वह आशंका कहलाती है।

शंका अलग, जिज्ञासा अलग

प्रश्नकर्ता : शंका और जिज्ञासा में क्या फर्क है?

दादाश्री : शंका और जिज्ञासा में क्या संबंध है? शंका और जिज्ञासा, वे दोनों एक परिवार के तो हैं ही नहीं, लेकिन रिश्तेदार तक भी नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : ये वैज्ञानिक जो हैं, वे लोग शोध करते हैं, उसमें खुद शंका रखकर ही आगे बढ़ते हैं।

दादाश्री : कोई ऐसा वैज्ञानिक पैदा नहीं हुआ है कि जो एक मिनट से अधिक शंका रखे। नहीं तो उसका विज्ञान चला जाएगा, खत्म हो जाएगा। क्योंकि शंका अर्थात् आत्महत्या! जिसे शंका करनी हो, वह करे।

प्रश्नकर्ता : वैज्ञानिक बगैर शंका के मानते नहीं है। वे लोग शंका करते हैं इसलिए खोज कर पाते हैं।

दादाश्री : वह शंका नहीं है। वह उत्कंठा है, जानने की। उन्हें शंका नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : आप लोगों पर शंका करने को मना करते हैं?

दादाश्री : लोग क्या, कहीं पर भी शंका नहीं करनी चाहिए। इस पुस्तक पर भी शंका नहीं करनी चाहिए। शंका अर्थात् आत्महत्या।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हर एक पुस्तक में लिखा हुआ सबकुछ मान लेना चाहिए?

दादाश्री : मान नहीं लेना है। एक ही मिनट के लिए शंका रखकर और पलट जाना है। उससे आगे गए तो शंका इतना बड़ा 'पोइज़न' है कि उसे एक मिनट से अधिक लिया गया तो वह आत्महत्या समान है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि गलत ही लिखा हो तो क्या होगा?

दादाश्री : गलत होता ही नहीं है। लेकिन यदि शंका होती है, तो एक मिनट शंका करके फिर शंका बंद कर देनी चाहिए।

जाँच-पड़ताल, खोजबीन से बढ़ती है शंका

आपको कभी कोई शंका नहीं होती है न?

प्रश्नकर्ता : वह तो होती ही है न।

दादाश्री : आपको शंका होती है तब आप क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : जाँच करते हैं।

दादाश्री : जाँच करने से तो और अधिक शंका डालता है।

प्रश्नकर्ता : किसी भी जाँच-पड़ताल की जड़ तो शंका ही होती है न?

दादाश्री : जाँच-पड़ताल करके और (फिर) सोच-समझकर खिसक जाना चाहिए हमें। जाँच करना, सोचना और हट जाना। शंका को बीच में लाने का कोई कारण ही नहीं है। शंका कब होती है? कि दोनों में 'एग्रीमेन्ट' हो चुका हो, उसके बाद बीच में कुछ गड़बड़ हो जाए, तब शंका उत्पन्न होती है। यों ही तो शंका नहीं होती। अर्थात् शंका कहाँ पर होती है? कि दोनों का कोई संबंध हो, उन दोनों में खुद के 'डिसाइडेड' (इच्छा) अनुसार उससे कुछ अलग हो जाए तब शंका होती है कि यह क्या है! उसमें भी एक मिनट से अधिक शंका नहीं रखनी चाहिए। फिर तो उसे तय कर लेना चाहिए कि मेरा 'व्यवस्थित' ऐसा है। लेकिन शंका तो करनी ही नहीं चाहिए फिर। शंका अर्थात् आत्महत्या!

शंका नहीं, पर जाग्रत रहना है

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार, जब गाड़ी चलाते हैं न, उस समय हमें सामने जागृति तो रखनी ही पड़ती है न? इसी प्रकार हमारा जीवन व्यवहार चलाते समय हमें हमेशा जागृति तो रखनी ही पड़ेगी न, कि 'ऐसा करूँगा तो यह आदमी खा जाएगा'! ऐसा तो हमें ध्यान में रखना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : वह तो रखना पड़ेगा लेकिन शंका नहीं करनी है और ऐसी जागृति रखने की भी ज़रूरत नहीं है कि 'यह खा जाएगा'। सिर्फ हमें सावधान रहना चाहिए। इसे जागृति कह सकते हो, लेकिन शंका नहीं करनी है। 'ऐसा होगा तो क्या होगा, शायद अगर ऐसा होगा तो क्या होगा!' ऐसी शंकाएँ नहीं करनी चाहिए। शंकाएँ तो बहुत नुकसानदायक! शंका तो उत्पन्न होते ही दुःख देती है।

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा होता है कि किसी काम में ऐसे 'प्रोब्लम्स' आने लगें तब सामने वाले व्यक्ति पर हमें शंका होती है, और उस वजह से हमें दुःख रहा करता है।

दादाश्री : हाँ, वह निराधार शंकाएँ हैं। शंका में दो चीज़ें होती हैं। एक तो, प्रत्यक्ष दुःख होता है। दूसरा, उस पर शंका की, उसके बदले में गुनाह लागू होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें कोई भी काम करना हो या रास्ते पर पुल बनाना हो तो उसके 'सेफ्टी फैक्टर' तो ध्यान में लेने पड़ेंगे न? नहीं लेंगे तो पुल गिर जाएगा। वहाँ पर अगर अजागृति रखकर पुल बना दें, तो ऐसा तो चलेगा ही नहीं न!

दादाश्री : वह ठीक है। सभी 'सेफ्टी फैक्टर' रखने चाहिए, लेकिन उसके बाद सेटिंग (निर्धारित) करते समय फिर से शंका नहीं होनी चाहिए। शंका खड़ी हुई कि दुःख खड़ा होगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कोई भी काम करते हुए कोई व्यक्ति उसमें गलत नहीं करे, उसके बारे में सोचना तो पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ, सोचने की सारी छूट है ही। शंका करने की छूट नहीं है। जितना सोचना हो उतना सोच, पूरी रात सोचना हो तब भी सोच, लेकिन शंका मत करना। क्योंकि उसका 'एन्ड' ही नहीं आएगा। शंका 'एन्डलेस' (अंतहीन) चीज़ है। विचारों का 'एन्ड' (अंत) आएगा। मन थक जाता है न! क्योंकि बहुत सोचने से मन हमेशा थक जाता है इसलिए फिर वह अपने आप ही बंद हो जाता है।

लेकिन शंका नहीं थकती। शंका तो ऐसी आती है, वैसी आती है इसलिए तू शंका मत रखना। इस जगत् में शंका करने जैसा अन्य कोई दुःख है ही नहीं। शंका करने से तो पहले खुद का ही बिगड़ता है, उसके बाद सामने वाले का बिगड़ता है। हमने तो पहले से ही ये खोज कर ली है कि शंका से अपना खुद का ही बिगड़ता है।

यह 'प्रिकॉशन' है या दखल?

शंका तो दुःख भी बहुत देती है, भयंकर दुःख देती है। वह शंका कब निकलेगी? कई बार हज़ार-दो हज़ार के ज़ेवर, घड़ी वगैरह किसी ने रास्ते में मारकर सब लूट लिया हो, तब फिर यदि कपड़े, घड़ी, ज़ेवर वगैरह पहनकर फिर से बाहर जाना हो तो उस घड़ी शंका उत्पन्न होती है कि अगर आज (लुटेरा) मिल जाएगा तो? अब न्याय क्या कहता है? यदि उसे मिलना होगा तो उससे बच नहीं पाएगा, फिर तू क्यों बिना बात के शंका करता है?

प्रश्नकर्ता : वह शंका उत्पन्न हुई, अब वहाँ पर उसके लिए कोई 'प्रिकॉशन' (एहतियात, पूर्वोपाय) वगैरह लेने की कोई ज़रूरत नहीं रहती?

दादाश्री : 'प्रिकॉशन' लेने से ही बिगड़ता है न! अज्ञानी के लिए ठीक है। यदि इस किनारे पर आना हो तो इस किनारे का सबकुछ एक्ज़ेक्ट करो। उस किनारे पर रहना हो तो उस किनारे का एक्ज़ेक्ट रखो। यदि शंका करनी हो तो उस किनारे पर रहो। बीच रास्ते में रहने का कोई अर्थ ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन कोई 'डेन्जर सिग्नल' (खतरे का संकेत) आए तब उसमें शंका न रखें, लेकिन उसके लिए सहज भाव से 'प्रिकॉशन' लेने चाहिए न?

दादाश्री : 'प्रिकॉशन' आपसे लिया ही नहीं जा सकता। 'प्रिकॉशन' लेने की शक्ति ही नहीं है। वह शक्ति है ही नहीं, उसे 'एडोप्ट' करने (अपनाने) का क्या अर्थ है?

प्रश्नकर्ता : हमारे में 'प्रिकॉशन' लेने की शक्ति है ही नहीं?

दादाश्री : बिल्कुल भी शक्ति नहीं है। जो शक्ति नहीं है, उसे यों ही मान लेना, वह काम का नहीं है न। यह तो, 'प्रिकॉशन' लेने की शक्ति

नहीं है और करने की भी शक्ति नहीं है और 'प्रिकॉशन' 'चंदूभाई' ले ही लेते हैं। आप बिना बात के दख़ल करते हो। करता है कोई दूसरा और आप सिर पर ले लेते हो और इसीलिए बिगड़ता है।

प्रश्नकर्ता : यानी चंदूभाई 'प्रिकॉशन' ले, तो उसमें हर्ज नहीं है?

दादाश्री : वह तो लेता ही है, हमेशा ही लेता है। बातें करते-करते कोई व्यक्ति चल रहा हो, यानी कि वह असावधानी से चल रहा होता है लेकिन यदि एकदम से ऐसे साँप जाता हुआ दिख जाए, तो एकदम से कूद जाता है वह। वह कौन सी शक्ति से कूदता है? कौन कुदाता होगा? ऐसा होता है या नहीं होता? इतनी अधिक साहजिकता है इस देह में। इन 'चंदूभाई' में इतनी अधिक साहजिकता है कि ऐसे देखते ही कूद पड़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसी साहजिकता हमारे काम-धंधे में और व्यवहार में नहीं आती।

दादाश्री : वह तो इसलिए कि दखल करते हो। और यदि शंका करो तो हर प्रकार से करनी चाहिए, कि 'भाई, कल मर जाएँगे तो क्या होगा? कोई मरता नहीं है?'

प्रश्नकर्ता : मरते हैं न!

दादाश्री : तब फिर! इसलिए यदि शंका करो तो हर प्रकार की करना। यह एक ही प्रकार की क्यों करनी? वर्ना कौन सी शंका नहीं होगी, ऐसा है यह जगत्! किस बारे में शंका नहीं होगी? यहाँ से घर पहुँच गए तभी सही है। उसमें क्यों शंका नहीं होती? शंका होनी ही नहीं चाहिए। यानी शंका से कहना चाहिए, 'चली जा। मैं नि:शंक आत्मा हूँ'। आत्मा को क्या शंका भला!

विश्वास ढूँढने वाला बनता है 'पागल'

शंका वाला अर्थात् शंका का भूत जागा कि व्यक्ति मर गया। विश्वास ढूँढता है! इस दुनिया में जिसने विश्वास ढूँढा, वह मर गया, वह मैड (पागल) व्यक्ति कहलाता है। जो विश्वास ढूँढता है, उसे घर से भाग जाना पड़ता है। अत: किसी भी चीज़ के लिए विश्वास मत ढूँढना।

प्रश्नकर्ता : बाज़ार में कोई भी चीज़ लेने जाते हैं तो सभी देखकर लेते हैं।

दादाश्री : हाँ, देखकर लो। फिर गहराई में मत उतरो। गहराई में उतरोगे तो फिर भाग जाना पड़ेगा। विश्वास मत ढूँढना। जो हुआ सो करेक्ट। फिर उसमें कुछ नया करेक्ट नहीं होता। जो विश्वास ढूँढने गया कि उसकी आ बनी, उसे मेन्टल हॉस्पिटल में जाना पड़ा, विश्वास ढूँढने वाले को, हाँ! और जिनसे विश्वास चाहता है न, वे सभी बार-बार मेन्टल हॉस्पिटल में डाल देते हैं। यह जीव कहाँ से आया विश्वास ढूँढने वाला। उसे 'जंतु' कहते हैं लोग।

पत्नी से एक दिन कहें, 'इसका क्या प्रमाण है कि तू शुद्ध है?' तब पत्नी क्या कहेगी, 'अरे, जंगली है'। इस दुनिया में दो चीज़ें रखनी चाहिए। ऊपर-ऊपर से (उपलक) विश्वास खोजना और ऊपर-ऊपर से शंका करना। गहराई में मत उतरना। अंत में तो, विश्वास खोजने वाला मैड (पागल) हो जाता है, लोग मेन्टल हॉस्पिटल (पागलखाना) में धकेल देंगे।

शंका और भय, वे हैं कारण-कार्य

यह तो केवल शंका के ही वातावरण में जी रहा है पूरा जगत्, कि 'ऐसा हो जाएगा या वैसा हो जाएगा'। कुछ भी नहीं होने वाला। बेकार ही

क्यों घबराता है? सोये रहो न, सीधी तरह से। बिना काम के इधर-उधर चक्कर लगाता रहता है। तूने खुद अपने आप पर श्रद्धा रखी है वह गलत है सारी, 'हंड्रेड परसेन्ट'! यानी कि कुछ भी नहीं होने वाला। लेकिन देखो न घबराहट, घबराहट, तड़फड़ाहट, तरफड़ाहट! जैसे साथ में ले जाने वाला है न, थोड़ा बहुत!

यह तो, पूरे दिन 'क्या होगा, क्या होगा?' इस तरह घबराता रहता है। अरे, क्या होना है? यह दुनिया कभी भी गिर नहीं गई है।

हम नेपाल की यात्रा में बस लेकर गए थे। तब रास्ते में उत्तर प्रदेश में रात को बारह बजे एक शहर आया था। कौन सा था वह शहर?

महात्मा : बरेली था वह।

दादाश्री : हाँ। तो बरेली वाले सारे फौज़दार, और कहने लगे कि, 'बस रोको'। मैंने पूछा कि, 'क्या है?' तब उन्होंने कहा कि, 'अभी आगे नहीं जा सकते। रात को यहीं पर रहो, आगे रास्ते में लुट लेते हैं। पचास मील के एरिया में इस तरफ से, उस तरफ से सभी को रोकते हैं'। तब मैंने कहा कि, 'भले ही लुट जाएँ, हमें तो जाना है'। तब अंत में उन लोगों ने कहा कि, 'तो साथ में दो पुलिस वालों को लेते जाओ'। तब मैंने कहा कि, 'पुलिस वालों को भले ही बैठा दो'। तब फिर दो पुलिस वाले बंदूक लेकर बैठ गए, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। ऐसा योग बैठना, वह तो अति-अति मुश्किल है। और अगर वैसा योग होना होगा तो हज़ारों प्रयत्न करोगे, तब भी तुम्हारे प्रयत्न बेकार हो जाएँगे। अत: डरना मत, शंका मत करना। जब तक शंका नहीं जाएगी, तब तक कभी भी काम नहीं हो पाएगा। जब तक नि:शंकता नहीं आएगी, तब तक मनुष्य निर्भय नहीं हो सकेगा। जहाँ शंका है, वहाँ भय होता ही है।

प्रश्नकर्ता : यह भय और शंका, इन दोनों में पारस्परिक संबंध है क्या?

दादाश्री : शंका से ही भय उत्पन्न होता है और भय से शंका होती है। वे दोनों कारण-कार्य जैसे हैं। शंका बिल्कुल नहीं रखनी चाहिए। किसी भी मामले में शंका मत रखना। लड़का बिगड़ रहा है या लड़की बिगड़ रही है, ऐसी शंका नहीं करना। उसके लिए प्रयत्न करना।

कहीं भी भरोसा है ही नहीं?

अपने हिन्दुस्तान के लोग तो इतने अधिक चिंता वाले हैं कि ये सूर्यनारायण यदि एक दिन की छुट्टी ले लें और ऐसा कहें कि 'फिर कभी छुट्टी नहीं लूँगा' तो वे यदि छुट्टी ले लें तो दूसरे दिन लोग शंका करेंगे कि कल सूर्यनारायण आएँगे या नहीं आएँगे, सुबह होगी या नहीं होगी? यानी नेचर पर भी भरोसा नहीं है, खुद अपने आप पर भी भरोसा नहीं है, भगवान पर भी भरोसा नहीं है। किसी चीज़ पर भरोसा नहीं, खुद की वाइफ पर भी भरोसा नहीं। अहमदाबाद के एक सेठ की वाइफ को यात्रा में जाने के लिए बीस हज़ार रुपये की ज़रूरत थी, तो सात साल तक अपनी पत्नी से कहता रहता है कि 'अभी सुविधा नहीं है, सुविधा नहीं है'। आपकी समझ में आया न? खुद अपने आप से भी कपट है, यानी कहाँ पर यह कपट नहीं करता? इसलिए कबीर साहब ने सच कह दिया कि,

''मैं जानूँ हरि दूर है, हरि हृदय मांही,
आडी त्राटी कपट की, तासे दिसत नाहीं।''

भीतर खुद ने कपट का परदा रखा हुआ है।

उसके बावजूद भी भगवान पास में दिखने लगे। वह परदा है फिर भी ज़रा जाली में से दिखने लगे तो मन में शर्म आने लगी कि भगवान देख लेंगे। इसलिए परदे पर डामर (राल) लगवाया, हर साल दो-दो बार डामर लगवाया। यह परदा जान-बूझकर खुद ने ही खड़ा किया है।

शंका के साथ कपट-दग़ा होता ही है

ये बेटियाँ बाहर जाएँ, पढ़ने जाएँ, तब भी शंका। 'वाइफ' पर भी शंका। ऐसा सब दग़ा है। घर में भी दग़ा ही है न अभी। इस कलियुग में खुद के घर में ही दग़ा होता है। कलियुग यानी दग़े का काल। कपट और दग़ा, कपट और दग़ा, कपट और दग़ा! ऐसा किस सुख के लिए करते हैं? वह भी भान बिना, मूर्च्छा में। बुद्धिशाली लोगों में दग़ा और कपट नहीं होता। निर्मल बुद्धि वालों के वहाँ कपट और दग़ा नहीं होता। यह तो, 'फूलिश' (मूर्ख) मनुष्य के यहाँ आज दग़ा और कपट होते हैं। कलियुग है यानी सभी 'फूलिश' ही जमा हुए हैं न।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जो दग़ा और कपट होता है, उसमें भी राग और द्वेष काम करते हैं न?

दादाश्री : राग-द्वेष हैं, तभी यह सब कार्य होता है न। वर्ना जिसे राग-द्वेष नहीं हैं, उसे तो कुछ है ही नहीं न। राग-द्वेष नहीं हों, तो जो कुछ भी करे, कपट करे तो भी हर्ज नहीं है और अच्छा करे तो भी हर्ज नहीं है। क्योंकि वह धूल में खेलता ज़रूर है, लेकिन तेल नहीं लगाया और राग-द्वेष वाला तो तेल लगाकर धूल में खेलता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दग़ा और कपट करने में बुद्धि का योगदान तो है ही न?

दादाश्री : नहीं, अच्छी बुद्धि कपट और दग़ा निकाल देती है। बुद्धि 'सेफसाइड' रखती है। एक तो शंका मार डालती है, फिर कपट और दग़ा तो होता ही है और फिर हर कोई खुद के सुख में ही मग्न होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन खुद के सुख में रहने के लिए बुद्धि का उपयोग करके दग़ा और कपट खेल सकते हैं न?

दादाश्री : जहाँ खुद अपना सुख ढूँढते हैं, वहाँ अच्छी बुद्धि होती ही नहीं न। अच्छी बुद्धि तो सामुदायिक सुख ढूँढती है कि मेरा सारा परिवार सुखी हो जाए। लेकिन यह तो बेटा अपना सुख ढूँढता है, पत्नी अपना सुख ढूँढती हैं, बेटी अपना सुख ढूँढती है, बाप अपना सुख ढूँढता है, सभी अपना-अपना सुख ढूँढते हैं। यदि यह बात बता दें न, तो परिवार के लोग साथ में रहेंगे ही नहीं। लेकिन ये तो सभी साथ रहते हैं और खाते-पीते हैं। ढँका हुआ है, वही अच्छा है।

पहचानो शंका वाली बुद्धि को

इसलिए जहाँ-जहाँ पर बुद्धि का उपयोग होता है न, वहाँ-वहाँ वह केवल खोट का ही व्यापार है और जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ पर उसकी हद में उपयोग हो ही जाता है। वहाँ पर बुद्धि अपने आप कुदरती रूप से ही जोइन्ट हो चुकी है, अंत:करण में वह तालमेल सहित जोइन्ट हो चुकी है। उसमें हम एक्सेस बुद्धि का उपयोग करते हैं, उससे यह सब झंझट खड़ा हुआ है।

बुद्धि चंचल बनाती है इसीलिए आत्मा का जो सहज स्वभाव है उसका स्वाद चखने को नहीं मिलता। बाहर का भाग ही चंचल है, लेकिन यदि बुद्धि को बाजू में बैठाए रखे तो सहज सुख बरतेगा। यदि कुत्ता दिखा तो ही बुद्धि कहेगी, 'कल उसे काटा था, उसी के जैसा यह कुत्ता दिखाई

दे रहा है, यदि मुझे काट लेगा तो?' अरे, उसके हाथ में क्या सत्ता है? 'व्यवस्थित' में होगा तो काटेगा। बुद्धि, तू बाजू में बैठ जा। अगर खुद की सत्ता होती तो लोग खुद का सीधा नहीं करते? लेकिन सीधा नहीं हुआ। बुद्धि तो शंका करवाती है। शंका होने से दखल होता है। हमें तो अपने निःशंक पद में रहना है। संसार तो शंका, शंका और शंका में ही रहने वाला है।

बुद्धि और शंका से जगत् फँसा है

प्रश्नकर्ता : अधिक बुद्धिशाली लोगों को ही अधिक शंका होती है न?

दादाश्री : हाँ। वह तो ऐसा है न, अभी तो विपरीत बुद्धि का असर है। वह विपरीत बुद्धि बहुत शंकाएँ करवाती हैं। भयंकर अज्ञानता, उसी को शंका कहते हैं। उसे हर तरफ की समझ नहीं मिली है, इसलिए 'सॉल्व' नहीं हुआ, इसलिए वह शंका में पड़ा। 'सॉल्व' हो जाए तो वह शंका में नहीं पड़ेगा। बुद्धि लगाकर देखता है और यदि बुद्धि को आगे जाने का रास्ता नहीं मिलता तो शंका खड़ी करती है। यह 'व्यवस्थित' समझ में आ जाए तो कोई भी शंका खड़ी ही नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अधिक बुद्धिशाली लोगों को क्यों अधिक शंका होती है?

दादाश्री : उसे बुद्धि से सभी पर्याय दिखाई देते हैं। ऐसा दिखता है कि शायद ऐसा होगा, ऐसे हाथ रख दिया होगा! किसी व्यक्ति ने उसकी 'वाइफ' पर हाथ रख दिया, तब फिर सारे पर्याय खड़े हो जाते हैं, कि क्या होगा! और फिर सिलसिला शुरू हो जाता है। अबुध को तो कोई झंझट ही नहीं है, और वे भी वास्तव में अबुध नहीं होते हैं, उनका खुद का संसार चले उतनी उनमें बुद्धि होती है। उसे बाकी कोई झंझट नहीं होती। थोड़ा-बहुत होकर फिर बंद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : मतलब आप ऐसा कहना चाहते हो कि जो सांसारिक अबुध हैं, जो अभी बुद्धि में डेवेलप नहीं हुए हैं?

दादाश्री : नहीं, ऐसे लोग तो बहुत कम होते हैं, मज़दूर वगैरह।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे लोग बुद्धिशाली होने के बाद फिर अबुध दशा प्राप्त करेंगे न?

दादाश्री : उसकी तो बात ही अलग है न! वह तो परमात्मापद कहलाता है। बुद्धिशाली होने के बाद अबुध होते हैं, वह तो परमात्मापद है!

लेकिन बुद्धिशाली लोगों को यह संसार बहुत तंग करता है। अरे, पाँच बेटियाँ हों और वह मनुष्य बुद्धिशाली हो तो, 'ये बेटियाँ बड़ी हो गई हैं', अब वे सब जब बाहर जाती हैं, तब सभी पर्याय उसे याद आते हैं। बुद्धि से सबकुछ समझ में आता है। इसलिए उसे सबकुछ दिखाई देता है और फिर वह परेशान होता रहता है। फिर बेटियों को 'कॉलेज' तो भेजना ही पड़ता है और अगर ऐसा हो जाए तो वह भी देखना पड़ता है। और वास्तव में कुछ हुआ या नहीं हुआ, वह बात भगवान जाने, लेकिन वह तो शंका से मारा जाता है!

जहाँ हो जाता है, वहाँ उसे पता भी नहीं चलता, इसलिए वहाँ शंका नहीं है उसे और जहाँ नहीं होता है, वहाँ बेहद शंका है। अतः केवल शंका में ही जलता रहता है, और उसे भय ही लगता रहता है। यानी कि शंका हुई कि मनुष्य मारा जाता है। यह बुद्धि तो भटकाती है, शंका उत्पन्न करवाती है बुद्धि। और शंका से पूरा जगत् फँसा हुआ है।

शंका का मूल 'बुद्धि'

प्रश्नकर्ता : तो शंका का मूल क्या है? शंका क्यों होती होगी?

दादाश्री : शंका तो बुद्धि की दखल है, आवश्यकता से अधिक बुद्धि की दखल है वह। यानी कि शंका उत्पन्न करवाने वाली बुद्धि, सबकुछ उल्टा दिखाती है। वह शंका खड़ी करवाती है, अनर्थकारी! जगत् के सभी अनर्थों की सब से बड़ी जड़ हो तो वह शंका है, उससे फिर उसके अंदर वहम आ जाता है। पहले वहम होता है। बुद्धि उसे वहम करवाती है। यानी शंका बुद्धि का ही प्रदर्शन है। इसलिए अपने यहाँ तो मैं एक ही बात कहता हूँ कि किसी भी प्रकार की शंका रखना ही मत और शंका रखने जैसा जगत् में खास कारण है भी नहीं। यानी की शंका की जड़ बुद्धि है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह बुद्धि तो अच्छा दिखाती है और खराब भी दिखाती है।

दादाश्री : नहीं। जिसमें ज़रूरत लायक ही बुद्धि है, खुद की 'नेसेसिटी' लायक बुद्धि है, उसकी अगर पाँच बेटियाँ होंगी फिर भी विचार ही नहीं आएगा, विचार आए तब शंका होगी न?

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अधिक बुद्धि हो तभी यह गड़बड़ होती है?

दादाश्री : बुद्धि ही अधिक गड़बड़ करती है। क्योंकि इस काल की बुद्धि विपरीत मानी जाती है, व्यभिचारिणी बुद्धि कहलाती है। इसलिए फिर मार ही खिलाती रहती है।

प्रश्नकर्ता : और ज़रूरत लायक बुद्धि वाले को तो विचार ही नहीं आता, ऐसा है?

दादाश्री : हाँ। ज़रूरत लायक बुद्धि वाले कुछ लोग हिन्दुस्तान में हैं, उन्हें फिर दूसरा कुछ विचार ही नहीं आता। अक्ल वाले यानी अधिक सोचने वाले, अधिक बुद्धि वाले। अक्ल वाले के लिए हमें ऐसा होता है न, कि तू कितनी मार खाएगा? इसलिए जब भी कोई दुःख भुगतना पड़ता है, वास्तव में दुःख भुगतना पड़ता है, तब शंका उत्पन्न होती है।

दुःख भुगतना पड़ता है, तब शंका होती है

चाहे जैसी भी शंका हो उसे उत्पन्न होने से पहले ही उखाड़कर फेंक दो। शंका नुकसान ही करती है। शंका, आत्मा संबंधी रखने जैसी है, कि आत्मा यह होगा या वह होगा या वह होगा? जब तक यथार्थ आत्मा समझ में नहीं आता तब तक पूरे जगत् को शंका होती ही है। लेकिन यह सब तो, ये बेटियाँ बाहर खेलने जाती हैं, घूमने जाती हैं, टहलने जाती हैं, उसमें शंका करते हैं। किसी को पैसे दे देने के बाद, उधार देने के बाद शंका होती है, कि अब दो लाख वापस आएँगे या नहीं, ऐसी शंका होने पर सचमुच में सुख आता है न? दो लाख दिए हों आपने आज, तो एक महीने तक कुछ नहीं होता और उसके बाद शंका उत्पन्न होती है या नहीं? किसी ने कहा, कि वह पार्टी ठीक नहीं है और जब से भीतर शंका होती है तभी से सचमुच में सुख आता है न?

प्रश्नकर्ता : फिर उसका कोई अर्थ नहीं है।

दादाश्री : बस! यानी शंका कभी भी होने ही नहीं देना है, सावधानी रखना है।

अधिक विश्वास के रिएक्शन में शंका

प्रश्नकर्ता : दादा, मुझे भी शंका होती है।

दादाश्री : आप ज्ञाता-द्रष्टा में ही रहते हो,

फिर भी आपको शंका होती है? जहाँ शंका होती है वहाँ संताप होता है। क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : संताप।

दादाश्री : आपको शंका होती है, कि 'फिर क्या होगा? ऐसा होगा या नहीं, बिगाड़ेगा या क्या करेगा?' सिर्फ शंका ही! सिर्फ शंका ही करते रहते हो, इसलिए सबकुछ बिगड़ता है।

प्रश्नकर्ता : सबकुछ शंका से बिगड़ता है!

दादाश्री : शंका से ही सबकुछ बिगड़ा है न, यह 'ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा, फँलाना हो जाएगा'।

प्रश्नकर्ता : बाकी सब व्यवस्थित ने ठीक से सेट किया ही है?

दादाश्री : वह सब एक्ज़ेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : हम जो शंका करते हैं उसके बजाय अधिक विश्वास करें तो क्या उससे ज़्यादा अच्छा होगा?

दादाश्री : नहीं, विश्वास भी नहीं करना है और शंका भी नहीं करनी है। विश्वास करने से शंका होती है।

प्रश्नकर्ता : यह शंका वाली बात समझ में नहीं आई कि जहाँ विश्वास रखते हैं, वहीं पर शंका होती है।

दादाश्री : ऐसा है न, आप किस ज्ञान के आधार पर इस दृष्टि को नाप सकते हो? अरे! खुली आँखों से देखा हो, तो भी गलत निकलता है! यह तो बुद्धिजन्य ज्ञान से, विचारणा करके देखते हो। वह आपको मार खिला-खिलाकर परेशान कर देगा! इसलिए हम कहते हैं कि बुद्धि से दूर बैठो। बुद्धि तो थोड़ी देर भी चैन से नहीं बैठने देती। उसकी वजह से शंका होती है। इसलिए विश्वास भी मत करना और शंका भी मत करना। यह आपका तो बहुत अच्छा है। आपकी भावना अच्छी है इसलिए वापस मार्ग पर आ गए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है। अब, वह पता चला कि हम ज़रूरत से ज़्यादा विश्वास कर लेते हैं इसलिए उसके रिएक्शन (प्रतिक्रिया) में शंका होती है।

दादाश्री : हाँ, शंका होती है।

प्रश्नकर्ता : और शंका के रिएक्शन में यों घबरा जाते हैं।

दादाश्री : बस।

प्रश्नकर्ता : यानी यह मूल बात है। जैसे सभी का मूल राग है वैसे यह एक...

दादाश्री : शंका परेशान करती है, शंका साथ में ही जाती है, उसे मार पड़े बगैर नहीं रहती। शंका करेंगे तो उसे खुद को नुकसान होगा।

'शंका' में उतरने से मरणतुल्य दुःख

प्रश्नकर्ता : शंका में किस तरह का नुकसान होता है, वह ज़रा समझाइए न।

दादाश्री : शंका, वह दुःख ही है न। प्रत्यक्ष दुःख! वह क्या कम नुकसान है? शंका में गहरे उतरे तो मरणतुल्य दुःख होता है।

प्रश्नकर्ता : वह शूल (काँटे) की तरह रहता है?

दादाश्री : शूल तो अच्छा है। लेकिन शंका में तो उससे भी अधिक दुःख होता है। शूल तो बस इतना ही है कि, यदि कोई दूसरी चीज़ शरीर

में घुस जाए तो यों चुभती रहती है जबकि शंका तो मार ही डालती है मनुष्य को, संताप उत्पन्न करती है इसलिए शंका नहीं करनी चाहिए।

अब यह जो शंका है न, यदि दुनिया में कोई चीज़ ऐसी है, जो कभी भी किसी भी प्रकार से आराधना करने योग्य नहीं है तो वह है शंका! तमाम दुःखों का मूल कारण यह शंका ही है।

'शंका', वह है संक्रामक रोग

प्रश्नकर्ता : यह शंका तो अंदर कीड़े की तरह काम करेगा, कुतरता रहेगा।

दादाश्री : हाँ, पूरा ही जाग्रतकाल उसे खा जाएगा। टी.बी. का रोग! टी.बी. तो अच्छी है कि कुछ समय तक ही असर डालती है, फिर नहीं करती। यानी कि यह शंका तो टी.बी. का रोग है। जिसे यह शंका उत्पन्न हो गई उसमें टी. बी. की शुरुआत हो गई। यानी शंका किसी भी प्रकार से 'हेल्प' नहीं करती। शंका नुकसान ही करती है। इसलिए शंका को मूल (जड़) में से, वह उगे तभी से बंद कर देनी चाहिए, पर्दा गिरा देना चाहिए। वर्ना पेड़ बन जाएगा उसका तो! शंका और वहम वगैरह ऐसे बहुत तरह के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शंका का रोग और फिर वहम का रोग उत्पन्न होता है।

बाकी, यह शंका तो, संक्रामक रोग फैला हुआ है। शंका करने वाला बहुत दुःखी होता है न! मुश्किल है न! ये तो शंकाशील हुए इसलिए फिर सभी पर शंका होती है। बाकी, जगत् में सब से बड़ा रोग हो तो वह है शंका!

शंका, वह है खुद की 'आत्महत्या'

प्रश्नकर्ता : सबकुछ जानते हैं, लेकिन फिर भी शंका तो बार-बार हो जाती है।

दादाश्री : शंका, वह तो खुद की आत्महत्या है। शंका तो कभी भी मत करना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह शंका क्यों हो जाती है? शंका करने का कोई सवाल ही नहीं है। फिर भी शंका प्रतिक्षण हो जाती है।

दादाश्री : वह हो जाती है इसलिए आपको कहना है कि भाई, शंका नहीं है मेरी, यह नहीं है मेरी, जब हो जाए तब तुरंत कहना है।

हमें शंका नहीं होनी चाहिए। शंका से ही यह जगत् सड़ रहा है, पतन हो रहा है। खुद मरने वाला है लेकिन वैसी शंका क्यों नहीं होती? नहीं मरने वाला?

प्रश्नकर्ता : वह तो पता ही होता है कि मरने वाला ही है।

दादाश्री : लेकिन वहाँ शंका क्यों नहीं होती? मरने की शंका होती है न, तो वह निकाल फेंकता है। शंका हुई कि तुरंत निकाल फेंकता है। बहुत भय लगता है। इसलिए निकाल देना है। उखाड़कर फेंक देना है। जैसे ही हुई कि तुरंत उखाड़कर फेंक देना है।

शंका रूपी निर्बलता बाँधे दोष

प्रश्नकर्ता : इस शंका से, पहले तो खुद का ही आत्मघात होता है न?

दादाश्री : हाँ, शंका से तो खुद का ही, करने वाले का ही नुकसान हैं! सामने वाले को क्या लेना-देना? सामने वाले का क्या नुकसान है? सामने वाले को तो कुछ पड़ी ही नहीं है। सामने वाला तो कहेगा कि 'मेरा तो जो होने वाला होगा, वह होगा आप क्यों शंका कर रहे हो?'

हमने गाड़ी में किसी को पचास हज़ार रुपये

रखने को दिए और कहा कि, 'ज़रा मैं संडास जा रहा हूँ'। और फिर संडास में शंका हो तो? अरे, पाँच लाख रुपये दिए हों और शंका होने लगे न, तब भी शंका से कहना कि, 'अब तू चली जा। मैंने दे दिए, वे दे दिए। वे जाने होंगे तो जाएँगे और रहने होंगे तो रहेंगे'। सामने वाले पर शंका तो बिना बात के दोष बंधवाती है और यदि कभी मुझ जैसे को रुपये दिए हों और वह शंका करे तो उसकी क्या दशा होगी?

अब आप शंका करते हो तो वह आपकी निर्बलता है। मनुष्य में निर्बलता तो होती ही है, सहज रूप से होती ही है। निर्बलता नहीं हो तब तो बात ही अलग है। वर्ना, निर्बलता थोड़ी-बहुत तो होती ही है मनुष्य मात्र में। और निर्बलता गई कि भगवान बन गया! एक ही वस्तु है, निर्बलता गई - वही भगवान!

'शंका' करनी हो तो हमेशा करो

रात को सोने जाए, ग्यारह बजे हों और ओढ़कर सो जाए और तुरंत विचार आए कि 'अरे वह लाख रुपये लिखवाना तो रह गया। वह लिखकर नहीं देगा तो क्या होगा?' तो हो चुका! हो चुका काम भाई का! फिर मुरदा जी रहा हो न, उस तरह रहता है बाद में!

अब किसी को लाख रुपये उधार दिए हों और वह हर महीने हज़ार रुपये ब्याज दे रहा हो। उसको अब दो-तीन लाख रुपयों का नुकसान हो गया। लेकिन उसने ब्याज तो भेजा, इसलिए हमने जाना कि ब्याज तो भेजा है। लेकिन जब से हमें शंका पड़ी कि 'इसे नुकसान हुआ है तो शायद कभी यह मूल रकम नहीं देगा, तो क्या करूँगा? अब लाख रुपये वापस आएँगे या नहीं?' उस विचार को पकड़ लिया तो फिर उसका कब अंत आएगा? शंका रहे, तब तक अंत आएगा ही नहीं, यानी कि उस व्यक्ति की मृत्यु होने वाली है।

फिर रात को कभी भी आपको इस बारे में शंका हो कि लाख रुपये नहीं आएँगे तो क्या होगा? पूरे दिन आपको शंका नहीं हुई और रात को जब शंका हुई तब दु:ख होता है और पूरे दिन शंका नहीं हुई थी तब क्या उस घड़ी दु:ख नहीं था? रुपये दे दिए हों, उसके बाद 'वापस देगा या नहीं?' ऐसी शंका उत्पन्न होगी, तो आपको दु:ख होगा न? तो शंका इस घड़ी क्यों हुई और पहले क्यों नहीं हुई?

प्रश्नकर्ता : उसका क्या कारण है?

दादाश्री : यह अपनी मूर्खता। यदि शंका करनी हो तो हमेशा शंका करो, इतनी अधिक जागृतिपूर्वक शंका करो, उसे रुपये दो तभी से शंका करो।

जहाँ लाख रुपये दिए हों, उस समय ऐसा लगे कि 'पार्टी ठीक नहीं है,' तब भी शंका उत्पन्न नहीं होने देनी चाहिए। 'अब क्या होगा?' इसी को कहते हैं वापस शंका होना। क्या होना है आखिर? यह शरीर भी जाने वाला है और रुपये भी जाने वाले हैं। सभी कुछ चला जाने वाला है न? रोना ही है न, अंत में? अंत में इसे जला ही देना है न? तो भला पहले से ही मरने का क्या मतलब है? जी न, चैन से!

जब ऐसा होता है तब उस दिन मैं क्या करता हूँ? 'अंबालालभाई, जमा कर लो, रुपये आ गए!' कह देता हूँ। ऐसा नुकसान उठाने के बजाय चुपचाप रकम जमा कर लेना अच्छा है, सामने वाला जाने नहीं उस तरह से!

नहीं तो लोगों को तो अगर ज्योतिषी कहे

न, तो भी मान लेते हैं। ज्योतिषी कहते हैं, 'देखो, कितने अच्छे ग्रह हैं सभी। आपको कुछ होने वाला नहीं है। रुपये वापस आ जाएँगे'। तब फिर वैसा मान लेता है। उसकी खुद की भी स्टेबिलिटी (स्थिरता) नहीं है।

शंका करनी है तो अंत तक की

हम 'ज्ञान' होने के पहले से ही एक बात समझ गए थे। हमें एक जगह पर शंका हुई थी कि, 'यह व्यक्ति ऐसा करेगा, धोखाधड़ी करेगा'। इसलिए फिर हमने तय किया कि शंका करनी हो तो पूरी ज़िंदगी करनी है, वर्ना शंका करनी ही नहीं है। शंका करनी है तो अंत तक करनी है। क्योंकि उसे भगवान ने जागृति कहा है। यदि करने के बाद शंका बंद हो जानी है तो करना ही मत। हम काशी जाने के लिए निकले और मथुरा से वापस आ जाएँ, उसके बजाय निकले ही नहीं होते तो अच्छा था। यानी हमें उस व्यक्ति पर शंका हुई थी कि यह व्यक्ति ऐसा है। उसके बाद से, हमें शंका होने के बाद से, हम शंका रखते ही नहीं हैं। वर्ना उसके बाद से उसके साथ व्यवहार ही नहीं रखते। बाद में फिर धोखा नहीं खाते। यदि शंका रखनी हो तो पूरी ज़िंदगी व्यवहार ही नहीं करते।

शंका से स्पंदनों की लपटें

घर में ज़्यादातर तकरारें आजकल शंका की वजह से होती हैं। एक महिला कहती है, 'मुझे पति पर शंका है'। मैंने पूछा, 'कैसी शंका है?' तब कहती है, 'दूसरी स्त्री रखी है'। तब मैंने कहा, 'उसमें आपको क्या आपत्ति है? पति को रखना है न'! तब कहती है, 'उससे तो मुझे रात-दिन बहुत दुःख रहता है'। मैंने कहा, 'आपको क्या लेना-देना है?' 'पति दूसरी स्त्री (पत्नी) रखे और उसे लेकर घूमे तब भी, आपको उससे लेना-देना ही क्या है? शंका रखनी ही नहीं चाहिए'। इतने सारे शब्द बोलें, (फिर) उसने खुद ने ही कहा कि 'यह तो गलत हो गया'। तो शंका निकल गई। शंका रखनी नहीं चाहिए। वह तो, पति दूसरी दो (स्त्री) को लेकर आता हो। उसमें अपना कुछ भी नहीं चलता। शंका रखने से तो तू मर जाएगी। उसमें उनका क्या है? और बेचारा पति लाता है या वह ले जाती है, वह तो वही जानता होगा। लेकिन उसे देखो तो, निकल गई शंका में से, जो शंका लाख जन्मों में भी नहीं निकलती।

यह कैसा है कि शंका की वजह से स्पंदन उठते हैं और इन स्पंदनों से लपटें निकलती हैं। और अगर निःशंक हो जाएँ न, तो लपटें अपने आप ही शांत हो जाएँगी। पति-पत्नी दोनों शंकाशील होंगे, तो लपटें कैसे शांत होंगी? एक निःशंक हो, तभी छुटकारा हो सकता है। माँ-बाप की तकरार से बच्चों के संस्कार बिगड़ते हैं। बच्चों के संस्कार नहीं बिगड़ें, इसलिए दोनों को समझकर निपटारा लाना चाहिए।

मेरे अपने माने इसलिए शंका

प्रश्नकर्ता : शंकाशील कब हो सकते हैं? ऐसी कौन सी चीज़ है कि जिस वजह से शंका उत्पन्न होती है?

दादाश्री : अपनी मानी है इसलिए और अपनी न माने तो फिर शंका है ही नहीं। अपनी क्यों मानी, इसलिए शंका उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : वह शंका तो दूसरों के लिए ही होती है न? अपने आप पर नहीं होती न?

दादाश्री : दूसरों के लिए होती ही नहीं है, परंतु शंका करने का कारण ही नहीं है। यह तो

'मेरा' माना है इसलिए शंका होती है। 'मेरा' है नहीं और मानेंगे तो शंका होगी।

प्रश्नकर्ता : सभी पर शंका नहीं होती। एक या दो लोगों पर ही होती है तो क्या उनके साथ कुछ ऋणानुबंध है, इसलिए होती है?

दादाश्री : नहीं, सब मेरापन है इसलिए शंका होती है। यदि मेरापन न हो, तो शंका नहीं होगी। हीरे आपके हैं, किसी व्यक्ति ने देख लिए, तो उस व्यक्ति पर आपको शंका होगी। आपके हीरे न हों, तो आपको शंका नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : हीरे मेरे हों और मैं सो गई और मान लो कि मेरे साथ अन्य पाँच लोग भी सो रहे हों, तो मुझे शंका तो उन पाँचों पर ही होगी न?

दादाश्री : सभी पर होगी। वे हीरे आपके हैं इसलिए होती है। हीरे पहनने में हर्ज़ नहीं है, परंतु आपका मालिकीपन है, इसीलिए वह शंका होती है। हीरे पहनो, बेच दो, दे दो, खाओ-पीओ, मज़े करो परंतु मालिकीपन है तो शंका होगी।

आसक्ति और विषय के लालच से खड़ी है शंका

प्रश्नकर्ता : जहाँ पर आसक्ति है, वहाँ पर ही शंका होती है न हमें?

दादाश्री : हाँ, वहाँ ही, अन्य किसी भी जगह नहीं। कोई पैसे ले गया हो तो शंका होती है। कोई बगीचे में से फूल ले गया हो तो शंका होती है। सब बहुत प्रकार की शंकाएँ होती है। इन शंकाओं की वजह से ही टकराव में आते रहते हैं न, निरंतर दुःख में ही रहते हैं, कोल्ड वॉर में। अब कोल्ड वॉर (शीत युद्ध) करने की क्या ज़रूरत है आपको?

एक भाई कहते हैं कि मेरे साथ पत्नी की रोज़ कलह होती है। अब वाइफ का दोष है या उसका दोष? क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : दोष तो दोनों का ही होता है न! अब विषय में सुख लिया, उसी के परिणाम स्वरूप सभी झगड़े और क्लेश होते हैं न!

दादाश्री : सबकुछ इस विषय में से ही उत्पन्न हुआ है और उसमें सुख कुछ भी नहीं है। सुबह से ही ऐसा मुँह रहता है जैसे एरंडी का तेल पी लिया हो। जैसे एरंडी का तेल नहीं पी लिया हो!

प्रश्नकर्ता : यह तो कँपकँपी छूट जाती है कि इतने से सुख के लिए इतने सारे दुःख सहन करते हैं ये लोग!

दादाश्री : वही लालच है न, इस विषय को भोगने का!

प्रश्नकर्ता : विषय के लालच में जब खुद सफल नहीं हो पाता तब शंका वगैरह करता है न!

दादाश्री : सफल नहीं होने पर सबकुछ करता है। शंकाएँ करता है, कुशंकाएँ करता है सारी। सभी तरह के नाटक करता है वह फिर। फिर लालच भी हो जाता है लेकिन वही फिर उसकी फज़ीहत करता है, वह अलग। उसके कब्ज़े में गए तो फज़ीहत किए बगैर रहता नहीं है न!

'वाइफ' के साथ मन-वचन-काया से कोई (विषय) संबंध है ही नहीं और पतिपन रखता है, ऐसा नहीं होना चाहिए। पतिपन तो कब कहलाएगा? जब तक मन-वचन-काया से पाशवता वाला संबंध रहे, तभी तक पतिपन कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन विषय हो, तभी पतिपन करता होगा न?

दादाश्री : पतिपन यानी क्या कि डरा-धमकाकर भोग लेना। लेकिन फिर अगले जन्म का हिसाब बंध जाता है न!

प्रश्नकर्ता : उससे क्या होता है?

दादाश्री : बैर बंधता है! कोई आत्मा दबा हुआ रहता होगा एक घड़ी भर भी?

बहुत टकराव हो जाए न, फिर कहेगा, 'क्या तूँबड़े जैसा मुँह लेकर घूम रही हो?' तब फिर तूँबड़ा और अधिक बड़ा हो जाता है। फिर वह रोष रखती है। पत्नी कहती है, 'मेरे हत्थे चढ़ेगा तब मैं उसका तेल निकाल लूँगी'। वह रोष रखे बगैर रहती नहीं न! जीवमात्र रोष रखता है, बस उसे छेड़ने की देर है! कोई किसी से दबा हुआ नहीं है। किसी का किसी से लेना-देना नहीं है। यह तो सब भ्रांति से ऐसा दिखाई देता है कि मेरा है, मेरा-तेरा!

ये तो मजबूरन समाज में आबरू के लिए इस तरह पति से दबी हुई रहती हैं लेकिन फिर अगले जन्म में तेल निकाल देती है। अरे, नागिन बनकर काटती भी है!

ममता से उत्पन्न होती है शंका

एक पति को अपनी वाइफ पर शंका हुई थी। वह बंद होगी? नहीं। वह लाइफ टाइम शंका कहलाती है। काम हो गया न, पुण्यशाली ! पुण्यशाली व्यक्ति को होती है न! इसी तरह वाइफ को भी पति पर शंका हो जाए, वह भी लाइफ टाइम नहीं जाती।

प्रश्नकर्ता : नहीं करनी हो फिर भी हो जाती है, वह क्या है?

दादाश्री : *पोतापणुं* (मेरापन), मालिकीपना। मेरा पति है। पति भले ही हो, पति होने में हर्ज नहीं। मेरा कहने में हर्ज नहीं है, ममता नहीं रखनी चाहिए। मेरा कहना, मेरा पति ऐसा बोलना, लेकिन ममता नहीं रखनी है।

प्रश्नकर्ता : पति पर से ममता कैसे निकाल सकते हैं? 'मेरे नहीं हैं, नहीं हैं मेरे', ऐसा कहते रहना है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं कह सकते। मेरे तो हैं ही, पति तो मेरे ही हैं। भीतर मेरे कहने की क्या ज़रूरत है? ममता नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो ममता कम कैसे कर सकते हैं?

दादाश्री : यदि आत्मा पर ममता हो जाए तो (संसार में) कम हो जाएगी।

मेरी करने जैसी चीज़ें हैं सभी, लेकिन ममता रखने जैसी नहीं है। मेरी ज़रा चली गई तो आपकी, परंतु ममता नहीं। मेरी बाउन्ड्री से मेरी चली गई तो आपकी।

शंका तो रात में आकर, यानी जब तक शरीर नहीं थकता तब तक ताला नहीं लगाती। शरीर थककर सो जाता है, तब ताला लगा देती है।

प्रश्नकर्ता : शरीर में भी बदलाव हो जाता है। घबराहट होती है, ऐसा सब हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन थककर सो जाता है, सो जाता है। सुबह जब उठता है तब, रात में जो पुरुषार्थ किया था शंका का, उसका फल आपको क्या मिला? तब कहते हैं, शरीर बिगड़ गया। और भीतर मन-वन सब निर्बल हो जाते हैं। मन वीक (निर्बल) हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : यानी जब शंका उत्पन्न होती है

तब मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार, सभी का उपयोग वहीं होता है?

दादाश्री : सभी का। पूरे शरीर का तंत्र ही सबका उपयोग इसमें होता है। इसलिए (शंका को) आत्मघाती कहता हूँ न!

कीचड़ से दूर ही अच्छे

इस संसाररूपी घर में तो सभी मेहमान की तरह आए हुए हैं। जितने दिन रहे उतने दिन मेहमान, फिर चले जाएँगे। जाते हुए नहीं दिखते? ममता वाले और बिना ममता वाले, सभी चले जाते हैं न?

इसलिए एक मिनट भी मत बिगाड़ना। पाँच-पचास सालों तक रहना है, वहाँ हम एक मिनट भी क्यों बिगाड़ें? दाग़ पड़ जाएगा। कपड़ा यहीं रह जाएगा और दाग़ हमें लगेगा और वह दाग़ हमारे साथ आएगा। तो हम दाग़ क्यों पड़ने दें? अब, दाग़ कहीं सभी जगह नहीं पड़ जाते। सिर्फ जहाँ पर कीचड़ हो, वहीं पर हमें सँभलकर चलना है। धूल उड़े तो उसकी हम बहुत फिक्र नहीं करते। धूल तो अपने आप ही झड़ जाएगी, लेकिन कीचड़ तो चिपक जाता है। धूल तो, यों कपड़ों को झटकने से उड़ जाएगी लेकिन कीचड़ तो नहीं जाएगा और दाग़ पड़ जाएगा। इसलिए जहाँ पर भी कीचड़ जैसा है, वहाँ से दूर रहना है।

भयंकर दग़ाखोरी है यह

ये लोग तो कैसे हैं? कि जहाँ 'होटल' देखें वहाँ 'खा' लेते हैं। इसलिए यह जगत् शंका रखने योग्य नहीं है। शंका ही दुःखदाई है। अब जहाँ होटल देखे, वहीं पर खा लेते हैं, इसमें पुरुष भी ऐसा करते हैं और स्त्रियाँ भी ऐसा करती हैं। फिर उस पुरुष को ऐसा नहीं होता कि 'मेरी पत्नी क्या करती होगी?' वह तो ऐसा ही समझता है कि 'मेरी पत्नी तो अच्छी है'। लेकिन उसकी पत्नी तो उसे पाठ पढ़ाती है! पुरुष भी स्त्रियों को पाठ पढ़ाते हैं और स्त्रियाँ भी पुरुषों को पाठ पढ़ाती हैं! फिर भी स्त्रियाँ जीत जाती हैं क्योंकि इन पुरुषों में कपट नहीं है न! इसलिए पुरुष स्त्रियों द्वारा ठगे जाते हैं!

अतः जब तक 'सिन्सियारिटी-मॉरेलिटी' थी, तभी तक संसार भोगने लायक था। अभी तो भयंकर दग़ाखोरी है। हर एक को उसकी 'वाइफ' की बात बता दूँ तो कोई अपनी 'वाइफ' के पास नहीं जाएगा। मैं सब का जानता हूँ, फिर भी कुछ भी कहता नहीं हूँ। हालांकि पुरुष भी दग़ाखोरी में कम नहीं है लेकिन स्त्री तो केवल कपट का ही कारखाना है! कपट का संग्रहस्थान और कहीं पर भी नहीं होता, सिर्फ स्त्री में ही होता है।

चारित्र संबंधी शंका, वह महा जोखिम

बाकी शंका रखने जैसी चीज़ है ही नहीं, किसी भी प्रकार से। यह शंका ही मनुष्य को मार डालती है। ये सभी शंका के कारण मर ही रहे हैं न! अतः इस दुनिया में यदि सबसे बड़ा कोई भूत है तो वह शंका का भूत है। सबसे बड़ा भूत! शंका जगत् में कई लोगों को खा गई है, निगल गई है! इसलिए शंका पैदा ही मत होने देना। शंका पैदा होते ही खत्म कर देना। भले ही कैसी भी शंका पैदा हो, उसे पैदा होते ही खत्म कर देना, उसकी बेल बढ़ने मत देना। वर्ना शंका चैन से नहीं बैठने देगी। वह किसी को चैन से नहीं बैठने देती। शंका ने तो लोगों को मार डाला है। शंका ने बड़े-बड़े राजाओं को, चक्रवर्तियों को भी मार डाला है।

यदि लोग कहें कि 'यह नालायक मनुष्य

है'। तो भी हमें उसे लायक कहना है। क्योंकि शायद वह नालायक नहीं भी हो और यदि उसे नालायक कहोगे तो बहुत दोष लगेगा। सती हो और उसे यदि वेश्या कह दिया तो भयंकर गुनाह होगा, उसका फल कई जन्मों तक भुगतना पड़ेगा। अत: किसी के भी चरित्र के संबंध में मत बोलना। क्योंकि यदि वह गलत निकला तो? लोगों के कहने से, यदि आप भी कहने लगे तो उसमें आपकी क्या क़ीमत रही? हम तो कभी भी किसी के बारे में ऐसा नहीं बोलते और किसी के बारे में बोला भी नहीं है। मैं तो हाथ ही नहीं डालूँ न! वह ज़िम्मेदारी कौन ले? किसी के चरित्र से संबंधित शंका नहीं करनी चाहिए। बहुत बड़ा जोखिम है। शंका तो हम कभी लाते ही नहीं। हम क्यों जोखिम उठाएँ?

ऐसे दग़े में मोह कैसा?

यह जो संडास है, उसमें हर कोई व्यक्ति जाता है या एक ही व्यक्ति जाता है?

प्रश्नकर्ता : सभी जाते हैं।

दादाश्री : तो जिसमें सभी जाते हैं, वह संडास कहलाता है। जहाँ पर कई लोग जाते हैं न, वह संडास! जब तक एक पत्नीव्रत और एक पतिव्रत रहे, तब तक वह बहुत उच्च चीज़ कहलाती है, तब तक चारित्र कहलाता है, नहीं तो फिर संडास कहलाता है। आपके यहाँ संडास में कितने लोग जाते होंगे?

प्रश्नकर्ता : घर के सभी लोग जाते हैं।

दादाश्री : सिर्फ एक व्यक्ति नहीं जाता है न? अत: फिर दो जाएँ या सभी जाएँ, लेकिन वह संडास कहलाएगा।

यह तो जहाँ होटल आई, वहाँ पर खा लेता है। अरे, खाता-पीता भी है। इसलिए शंका निकाल देना। शंका से तो हाथ में आया हुआ मोक्ष भी चला जाएगा। अत: आपको ऐसा ही समझ लेना है कि इससे मैंने विवाह किया है और यह मेरी किराएदार है। बस, इतना मन में समझकर रखना। फिर वह चाहे अन्य किसी के भी साथ घूमती रहे, फिर भी आपको शंका नहीं करनी चाहिए। आपको काम से काम है न। आपको संडास की ज़रूरत पड़े तो संडास में जाना! जहाँ गए बगैर नहीं चलता, वह कहलाता है संडास। इसीलिए तो ज्ञानियों ने साफ-साफ कहा है न, कि संसार दग़ा है।

प्रश्नकर्ता : दग़ा नहीं लगता है। वह किस कारण से?

दादाश्री : मोह के कारण। और कोई बताने वाला भी नहीं मिला न! लेकिन लाल झंडी दिखाएँगे, तो गाड़ी खड़ी रहेगी, वर्ना गाड़ी नीचे गिर पड़ेगी।

मोह से मूर्च्छित दशा

लड़कियों पर शंका नहीं होती क्योंकि लड़कियों पर मोह है न। जहाँ पर मोह होता है, वहाँ उसकी भूल का पता नहीं चलता। मोह से मार खाता है न, जगत्। सभी माँ-बाप ऐसा कहते हैं कि, 'हमारी बेटियाँ अच्छी हैं'। यदि ऐसा है तब तो सत्युग ही चल रहा है ऐसा कहा जाएगा न? सभी माँ-बाप ऐसा ही कहते हैं न? जिन्हें पूछें वे ऐसा ही कहते हैं तो फिर सत्युग ही चल रहा है न, बाहर! तब वे वापस कहते हैं, 'नहीं, लोगों की लड़कियाँ बिगड़ गई हैं'। ऐसा भी कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : अभी तो उसकी बेटी के बारे में कुछ कहने जाएँ तो हमें दबोच लेंगे।

दादाश्री : ऐसा तो कहना ही नहीं चाहिए। दबोच लेंगे और गालियाँ भी देंगे। किसी को कुछ कह ही नहीं सकते। इतना अच्छा है कि हर एक माँ-बाप को उनके बेटे-बेटियों पर राग होता है। अत: राग के कारण उनके दोष दिखाई ही नहीं देते जबकि दूसरे की बेटियों के सारे दोष देख सकते हैं। अपनी बेटी के दोष नहीं दिखाई देते इतना अच्छा है न, उससे तो शांति रहती है और फिर आगे की बात बाद में देख लेंगे।

लोगों की टीका-संशय करने जैसा नहीं है

एक व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'मेरी बेटियाँ तो बहुत समझदार हैं'। मैंने कहा, 'हाँ, अच्छा है'। फिर वे भाई दूसरी लड़कियों की टीका (टीका-टिप्पणी) करने लगे। तब मैंने उनसे कहा, 'टीका किसलिए करते हो लोगों की? आप लोगों की टीका करोगे तो लोग आपकी भी टीका करेंगे'। तब उन्होंने कहा, 'मुझमें टीका करने जैसा है ही क्या?' तब मैंने कहा, 'दिखाता हूँ, चुप रहना'। फिर उनकी बेटियों की किताबें लाकर दिखाईं सब। 'देखो यह,' कहा। तब उन्होंने कहा, 'हें!' मैंने कहा, 'चुप हो जाओ। किसी की टीका मत करना। मैं जानता हूँ, फिर भी मैं आपके सामने क्यों चुप रहता हूँ? इतना सब आप रौब मारते हो, तब भी मैं चुप क्यों रहता हूँ?' मैं जानता हूँ कि भले ही रौब मारे, लेकिन संतोष रहता है न, उन्हें! लेकिन जब टीका करने लगे तब कहा कि, 'मत करना टीका'। क्योंकि बेटियों के बाप होकर आप किसी की बेटी पर टीका-टीप्पणी करें तो वह भूल है। जो बेटियों के बाप नहीं होते, जिनकी बेटियाँ नहीं होतीं, वे ऐसी टीका ही नहीं करते बेचारे। ये बेटी वाले बहुत टीका करते हैं। जबकि तू बेटियों का बाप होकर टीका कर रहा है? आपको शर्म नहीं आती? ऐसा संशय रखने से कब अंत आएगा?

आजकल की लड़कियाँ भी बेचारी इतनी भोली होती हैं कि ऐसा मान लेती हैं कि मेरे पिता जी कभी भी मेरी डायरी नहीं पढ़ेंगे। उसके 'स्कूल' की डायरी में पत्र रखती हैं और बाप भी भोले होते हैं, उन्हें बेटी पर विश्वास ही रहता है। पर मैं तो यह सब जानता हूँ कि ये बेटियाँ बड़ी हो चुकी हैं। मैं उनके फादर से इतना ही कहता हूँ कि इसकी शादी करवा देना जल्दी। हाँ, और क्या कहूँ फिर?

शंका उत्पन्न होते ही फेंक देना

एक हमारा खास रिश्तेदार था, उसकी चार बेटियाँ थीं। वह बहुत जाग्रत था। उसने मुझसे कहा, 'ये लड़कियाँ बड़ी हो गई हैं, कॉलेज में जाती हैं, तो मुझे विश्वास नहीं रहता'। तब मैंने कहा, 'साथ में जाना। साथ में कॉलेज जाना और कॉलेज में से निकले तब वापस आना। वह तो एक दिन जाएगा, लेकिन दूसरे दिन क्या करेगा? पत्नी को भेजना'। अरे, विश्वास कहाँ रखना है और कहाँ नहीं रखना उतना भी नहीं समझता? हमें यहीं से उसे कह देना चाहिए, 'देख बेटी, हम अच्छे लोग हैं, हम खानदानी हैं, कुलवान हैं'। इस तरह उसे सावधान कर देना। फिर जो हुआ वह 'करेक्ट'। शंका नहीं करनी है। कितने लोग शंका करते होंगे? जो जाग्रत होते हैं, वे शंका करते रहते हैं। कमअक्ल को तो शंका ही नहीं होती न!

इसलिए किसी भी प्रकार की शंका उत्पन्न होने से पहले ही उसे उखाड़कर फेंक देना चाहिए। यह तो, ये लड़कियाँ बाहर घूमने जाएँ, खेलने जाएँ, उन पर शंका करता है और शंका उत्पन्न हुई तो वहाँ हमें सुख रहता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन फिर शंका करने का अर्थ नहीं है।

दादाश्री : हाँ, बस! इसलिए चाहे कुछ भी कारण हो फिर भी शंका उत्पन्न नहीं होने देनी चाहिए। सावधानी रखनी चाहिए, लेकिन शंका नहीं करनी चाहिए। शंका हुई कि 'मृत्यु' आई समझो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन शंका तो अपने आप ही उत्पन्न होती है न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह भयंकर अज्ञानता है। उससे बहुत दुःख पड़ते हैं। बेटियाँ बाहर जाएँ और कोई कहे कि उसे उसका 'फ्रेन्ड' मिल गया है। तब फिर लड़कियों पर शंका होती है, तो क्या स्वाद आएगा?

प्रश्नकर्ता : बस, फिर अशांति रहा करती है।

दादाश्री : अशांति रखने से क्या बाहर सब ठीक हो जाएगा? 'फ्रेन्ड' के साथ घूमती है, क्या उसमें कुछ बदलाव आ जाएगा? बदलाव कुछ होगा नहीं और वह शंका से ही मर जाएगा! इसलिए शंका उत्पन्न हो कि तुरंत ही 'दादाजी ने मना किया है' इतना याद करके बंद कर देना चाहिए। बाकी, सावधानी पूरी रखनी है।

लोगों की अपनी लड़कियाँ तो होती हैं न? तब क्या वे कॉलेज में नहीं जाएँगी? ज़माना ऐसा है, इसलिए कॉलेज में तो जाएँगी न? यह क्या पहले का ज़माना है कि बेटियों को घर में बिठाकर रखेंगे? इसलिए जैसा ज़माना है, उसके अनुसार चलना पड़ेगा न। यदि दूसरी लड़कियाँ अपने 'फ्रेन्ड' के साथ बात करती हैं, तब वैसे ही ये लड़कियाँ क्या अपने 'फ्रेन्ड' के साथ बात नहीं करेंगी?

अब बेटियों की जब ऐसी कोई बात सुनने में या देखने में आए और शंका हो तब असल मज़ा आता है। अगर आकर मुझसे पूछे तो मैं तुरंत कह दूँगा कि 'शंका निकाल दे'। यह तो तूने देखा इसलिए शंका हुई और नहीं देखा होता तो? देखने से ही शंका हुई है तो, नहीं देखा, ऐसा कहकर 'करेक्ट' कर ले न! 'अन्डरग्राउन्ड' में तो यह सब है ही। लेकिन उसके मन में ऐसा होता है कि, 'ऐसा होगा तो?' तब फिर वह पकड़ लेता है उसे। फिर भूत छोड़ता नहीं है उसे, पूरी रात नहीं छोड़ता। रात को भी नहीं छोड़ता, एक-एक महीने तक नहीं छोड़ता। इसलिए शंका रखना गलत है।

एक भाई अपनी बेटी के बारे में बात कर रहे थे। वे मुझसे कहने लगे, 'यह दूसरी जाति का लड़का मेरी बेटी के साथ घूमता है और ऐसा सब है, तो मुझे रात को नींद नहीं आती'। मैंने पूछा, 'क्यों नहीं आती?' नहीं सोओगे उससे क्या यह छूट जाएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं छूटेगा।

दादाश्री : मैंने कहा, 'यह शंका निकाल दो'। क्योंकि चार बेटियों का बाप है और फिर ब्रिलियन्ट है, जाग्रत है। जब से बेटी फर्स्ट ईयर में आई है, तभी से उसकी दृष्टि निगरानी करती है। 'किसके साथ घूमती होगी? क्या करती होगी? कहाँ गई होगी?' चारों का देखने जाएगा तो क्या रहेगा उसके पास? यह तो अच्छा है, यह पब्लिक मोही है न, इसलिए भान ही भूल जाते हैं। बेटियाँ गई हों कॉलेज़ में और वह भूल जाता है और वह व्यापार में लगा रहता है। इसलिए गाड़ी अच्छी चलती है न। वर्ना, मर जाता भाई!

शंका से पूरा जगत् फँसा हुआ है, मैं तो इतना बता देता हूँ। जो व्यवस्थित है, उसे कोई बदल नहीं सकेगा। अतः जहाँ से शंका उत्पन्न हो,

चाहे जैसी भी, किसी भी प्रकार की शंका उत्पन्न हो, तो वहीं से उसे बीज में से उखाड़कर फेंक देना चाहिए। शंका से कुछ नहीं मिलेगा और वह शंका आपको मार डालेगी, वह अलग।

शंका के बीज से खड़ा संसार

शंका वह तो भयंकर दुःखदाई है और शंका है वहाँ संसार उत्पन्न हो जाता है। उससे नये प्रकार का संसार उत्पन्न हो जाए, ऐसा है। बबूल का बीज हो न, तब तो सिर्फ बबूल ही उगता है और एक बड़ का बीज हो न, तो उसमें से सिर्फ बड़ ही उगता है। लेकिन शंका नाम का बीज ऐसा है कि इस बीज से तो सत्रह सौ तरह की वनस्पतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। एक ही बीज में से सत्रह सौ तरह की वनस्पतियाँ उग जाती हैं, उस बीज को रखा ही कैसे जाए? यह शंका नाम का बीज, उसे सिर्फ हम निकाल चुके हैं। लेकिन आपको तो सहज रूप से कभी शंका हो जाती है, नहीं?

शंका? नहीं, संभाल रखो

अब, चार बेटियों का बाप सलाह लेने आया था, वह कह रहा था, 'मेरी ये चारों बेटियाँ कॉलेज में पढ़ने जाती हैं, तो उन पर शंका तो होगी ही न! तो मुझे क्या करना चाहिए उन चारों लड़कियों का? लड़कियाँ बिगड़ जाएँगी तो मैं क्या करूँगा?' मैंने कहा, 'लेकिन सिर्फ शंका करने से नहीं सुधरेंगी'। अरे, शंका मत करना। घर आएँ, तब घर पर बैठे-बैठे उनके साथ कुछ अच्छी बातचीत करना, 'फ्रेन्डशिप' करना। उन्हें आनंद हो ऐसी बातें करनी चाहिए और ऐसा मत करना कि तू सिर्फ व्यापार में, पैसे में ही पड़ा रहे। पहले बेटियों को संभाल। उनके साथ 'फ्रेन्डशिप' कर। उनके साथ नाश्ता कर, ज़रा चाय पी, वह प्रेम जैसा है। यह तो, ऊपर-ऊपर से प्रेम रखते हो, इसलिए फिर वे बाहर प्रेम ढूँढती हैं।

फिर मैंने कहा कि, उसके बावजूद भी आपकी बेटियों को किसी से प्रेम हो जाए और वह फिर रात को साढ़े ग्यारह बजे घर लौटे, तो क्या आप उसे निकाल दोगे? तब उसने कहा, 'हाँ, मैं तो गेटआउट कर दूँगा। उसे घर में घुसने ही नहीं दूँगा'। मैंने कहा, 'ऐसा मत करना। वह किसके यहाँ जाएगी रात को? वह किसके यहाँ आसरा लेगी?' उससे कहना, 'आ, बैठ! सो जा'। वह नियम है न कि नुकसान तो हुआ लेकिन अब इससे अधिक नुकसान न हो, उसके लिए संभाल लेना चाहिए। बेटी कुछ नुकसान करके आई और हम वापस उसे बाहर निकाल दें तो हो चुका न! लाखों रुपये का नुकसान तो होने लगा है, लेकिन तब नुकसान कम हो, ऐसा करना चाहिए या बढ़ जाए ऐसा करना चाहिए? नुकसान होने ही लगा है तो उसका उपाय तो होना ही चाहिए न? इसलिए बहुत ज़्यादा नुकसान मत उठाना। तू खुद ही उसे घर पर सुला देना, और फिर दूसरे दिन समझाना कि 'समय पर घर आना। मुझे बहुत दुःख होता है और इससे फिर मेरा हार्ट फेल हो जाएगा' कहना। 'ऐसे-वैसे करके समझा देना।' फिर वह समझ गया। रात को निकाल देगा तो वापस कौन रखेगा? लोग कुछ न कुछ कर देंगे। फिर खत्म हो जाएगा सबकुछ। रात को एक बजे निकाल देंगे तो लड़की कैसी लाचारी अनुभव करेगी बेचारी? यह तो कलियुग का मामला है। ज़रा सोचना तो चाहिए न?

यानी कभी रात को अगर बेटी देर से घर आए, तब भी शंका मत करना, शंका निकाल देना, तो कितना फायदा होगा? बेकार

का डर रखने का अर्थ क्या है? एक जन्म में कुछ भी नहीं बदलेगा। उन बेटियों को बिना बात के दुःख मत देना। बेटों को दुःख मत देना। सिर्फ इतना ज़रूर कहना कि, 'बेटी, तू बाहर जाती है तो देर नहीं होनी चाहिए। हम खानदानी हैं। हमें यह शोभा नहीं देता इसलिए इतनी देर मत करना'। इस तरह सारी बातचीत करना, समझाना। लेकिन शंका करने से कुछ नहीं होगा कि 'किसके साथ घूम रही होगी, क्या कर रही होगी?' और फिर रात को बारह बजे आए तब भी फिर दूसरे दिन कहना कि, 'बेटी, ऐसा नहीं होना चाहिए'। उसे यदि निकाल देंगे तो वह किसके यहाँ जाएगी उसका ठिकाना नहीं है। आपको समझ में आया न? फायदा किसमें है? कम से कम नुकसान होने में फायदा है न? इसलिए मैंने सभी से कहा है कि 'बेटियाँ देर से घर में आएँ, तब भी उन्हें घर में आने देना, उन्हें निकाल मत देना'। वर्ना बाहर से ही निकाल दें, ये सख्त मिज़ाज वाले लोग ऐसे ही हैं न? काल कितना विचित्र है! कितना जलन वाला काल है! और फिर यह कलियुग है, इसलिए घर में बिठाकर फिर समझाना।

वीतराग भाव से करो ड्रामा

इकलौती बेटी हो और उसे कोई उठाकर ले जा रहा हो और बाप वीतराग हो तो वे क्या करेंगे? महावीर की बेटी थी या नहीं? ऐसे वीतराग की इकलौती बेटी हो और कोई उठाकर ले जा रहा हो तो क्या करेंगे?

प्रश्नकर्ता : उसे रोकने का प्रयत्न करेंगे और उसके बावजूद भी ले जाए तो कुछ नहीं।

दादाश्री : वे प्रयत्न भी ड्रामेटिक करेंगे। ड्रामेटिक, नाटक में ऐसा करते हैं न, कि 'क्या समझता है तू तेरे मन में? तुझ पर मुकदमा दायर करूँगा। कोर्ट में तेरी शिकायत करूँगा। ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा'। सबकुछ नाटकीय बोलते हैं।

अपनी इकलौती बेटी हो, वहाँ ज्ञानी पुरुष क्या करेंगे? नाटक करेंगे। बेटी अपनी होती ही नहीं है! जहाँ देह ही अपना नहीं है, वहाँ बेटी अपनी कैसे हो सकती है? और जो होता है, जो हो रहा है, वह किसी की सत्ता की बात नहीं है। लेकिन फिर भी उस समय आप ऐसा नहीं कह सकते कि, 'अच्छा है भाई, तब तो तू ले जा'। ऐसा नहीं बोल सकते। वह व्यवहार कमज़ोर (गलत) दिखाई देगा।

प्रश्नकर्ता : सबकुछ करना है फिर भी निर्लेप रहना है।

दादाश्री : हाँ, फिर भी निर्लेप रहना है। सही समझे। देह ही अपना नहीं है। ये तो गालियाँ खाकर भी लोग कर्म बाँधने निकले हैं!

शुद्धात्मा में रहकर सेफसाइड करना

आपकी बेटी को उठाकर ले गए हो तब भी शंका नहीं करनी है। क्योंकि बेटी 'साथ में ले जाने की' चीज़ नहीं है। और उठाकर ले जाए, वह गैरकानूनी नहीं होता। उसके पीछे लॉ (कानून) है। लॉ होगा या नहीं होगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : हाँ... यह ज्ञान तो आपको कितना ज़्यादा सेफ (सलामत) रखता है, कोई भी दिक्कत नहीं होती। वे शंका वाले, अज्ञानी ही बिगाड़ते हैं ये सब। ऐसा संशय रखेंगे तो कब अंत आएगा? न्याय, वह थर्मामीटर है। न्याय क्या कहता है? यदि इस अनुसार हो तो करेक्ट कहना।

यह बहन बता रही थी कि यों ही कोई आया हो तब भी, 'ये कौन आया?' वे शंका वाले फादर, वे बेचारे दुःखी-दुःखी हो जाते हैं। ये लोग मुझसे पूछते हैं न, तो मैं उन्हें समझा देता हूँ कि भाई, दुःखी नहीं होना चाहिए। उनकी देखभाल करो। सभी प्रिकॉशन्स (एहतियाती उपाय) लो, परंतु उन पर शंका मत करो। लेकिन अपने लोगों को बेचारों को समझ ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : मान लो कि उसके पेरेन्टस, उसके माँ-बाप उसके लिए प्रिकॉशन लेते हों, नज़र रखते हों, तो उसे खुद को पता तो चल जाएगा न, कि...

दादाश्री : नज़र नहीं रखना है, प्रिकॉशन्स लेना है।

प्रश्नकर्ता : प्रिकॉशन रखें, तब भी उसे पता तो चल जाएगा न, कि ये शंका की वजह से मुझ पर प्रिकॉशन रखते हैं।

दादाश्री : वह तो भले ही पता चल जाए।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसे लगेगा न, कि ये मुझ पर शंका कर रहे हैं, ऐसा नहीं होगा?

दादाश्री : नहीं, उसे शंका नहीं कहते। शंका नहीं करनी है। प्रिकॉशन्स यानी उसे लड़कों के साथ अकेले नहीं जाने देना, इस तरह के सभी उपाय करने चाहिए। अपने यहाँ तो कुछ उम्र की बेटी को बाहर जाने ही नहीं देते थे। पता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : क्योंकि पेट्रोल और अग्नि दोनों को साथ में नहीं रख सकते। जोखिमों से भरा हुआ है, इसलिए जगत् के लोग भी समझते हैं कि दोनों को अलग रखना। फिर यदि वे ज्ञान वाले हों तो कुछ असर ही नहीं होता। पाँच लड़कियाँ फ्रेन्ड्स के साथ घूमती हों न, तब भी असर नहीं होता, ऐसा अपना ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : किसे असर नहीं होगा? माँ-बाप को असर नहीं होगा या उस घूमने वाली को असर नहीं होगा?

दादाश्री : वह असर तो किसी को भी नहीं होगा, यह 'ज्ञान' होने के बाद तो।

प्रश्नकर्ता : उन लड़कियों को 'ज्ञान' हो तब न!

दादाश्री : नहीं, लड़कियों को नहीं, आपको ज्ञान हो न, तो किसलिए बोदरेशन रखना है? यह तो, अपनी बेटी जैसा लगता है आपको, ये बेटी भी अपनी नहीं होती। यह तो तरबूज का बीज बोया तो तरबूज लगते ही रहते हैं। वे तो सभी कितने ही तरबूज लगते हैं। यह मालिकीपन का दुःख है, मालिकीपन का।

प्रश्नकर्ता : यानी बच्चों के लिए ऐसा नहीं होना चाहिए कि ये लोग दुःखी हो जाएँगे, एकदम गलत रास्ते पर चले जाएँगे तो?

दादाश्री : वैसा होगा। लेकिन उसका ऐसा अर्थ नहीं है कि आप उनके लिए शंकाएँ करें। दुःखी न हो, ऐसा उपाय करो। कॉलेज़ बदल दो, जगह बदल दो, संयोगों को बदल दो। उसके बावजूद भी बदलाव न हो तो उपाय नहीं है, निर्उपाय है, शुद्धात्मा में रहना है, जिसका उपाय ही नहीं है वहाँ!

प्रश्नकर्ता : हम उसका कॉलेज बदल दें, उसका सर्कल बदल दें, परंतु जब हमें उस पर शंका हो तब ऐसा सब करेंगे न हम?

दादाश्री : शंका नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो?

दादाश्री : सेफसाइड के लिए।

प्रश्नकर्ता : उसमें क्या फर्क है?

दादाश्री : शंका नहीं, सेफसाइड, रोकना है। कुछ भी प्रयास करो। मेरी बेटी होती तब भी शंका नहीं करता। हीरा बा पर भी शंका नहीं की। किसी पर भी मैं शंका क्यों करूँ? आमचा (हमें) क्या लेना-देना? हमें क्या लेना-देना? तुमचा (तुम्हें) भी नहीं और आमचा भी नहीं, जगत् माझा-माझा (मेरा-मेरा) करता रहता है। हमें क्या लेना-देना? (आपका भी नहीं और हमारा भी नहीं। जगत् मेरा-मेरा करता रहता है!)

व्यवहार की शंका में अपार नुकसान

कहीं भी शंका रखने जैसा नहीं है। शंका से मनुष्य खत्म हो जाता है। किसी भी स्थिति में शंका नहीं रखनी चाहिए। फिर जो होना हो वह हो। शंका तो रखनी ही नहीं है क्योंकि जो कुछ भी होने वाला है शंका रखने से वह कहीं कम नहीं हो जाता, बल्कि बढ़ता है। बाहर तो दूसरे लोग उल्टा कहते हैं, जिसे पूछने जाएँ वह कहेगा, 'भाई, सही बात हो तभी शंका होती है न। शंका नहीं होगी तो हम मनुष्य कैसे? क्या जानवरों को शंका होती है? हम मनुष्य हैं इसलिए इन बेटियों पर शंका तो होगी ही न?' ऐसा सिखाते हैं। मैं क्यों शंका को खत्म कर देता हूँ? क्योंकि शंका तो कुछ भी हेल्प नहीं करेगी। एक बाल बराबर भी हेल्प नहीं करेगी और बेहद नुकसान करेगी इसलिए मैं शंका को खत्म कर देता हूँ। शंका यदि हेल्प करती तो मैं ऐसा नहीं कह सकता था। शंका से अगर दस प्रतिशत भी हेल्प होती और नब्बे प्रतिशत नुकसान होता, तब भी मैं ऐसा नहीं कह सकता था। यह तो एक बाल बराबर भी हेल्प नहीं करती और नुकसान बेहद है।

शंका तो जड़मूल से निकाल देनी चाहिए। व्यवहार में भी शंका निकाल देनी है। शंका 'हेल्प' नहीं करती, नुकसान ही करती है। रूठने से भी फायदा नहीं होता, नुकसान ही होता है। कितने ही शब्द एकांतिक रूप से नुकसान पहुँचाते हैं। एकांतिक रूप का मतलब क्या है? लाभालाभ हों तब तो बात ठीक है लेकिन इससे तो सिर्फ अलाभ (नुकसान) ही है। ऐसे गुण! हटा दें तो अच्छा।

शंका तो सब से भयंकर चीज़ है। वह भूत जैसी है, डायन जैसी है। शंका के बजाय तो डायन का चिपकना अच्छा है, उसे तो कोई उतार देगा। लेकिन अगर शंका चिपक गई तो जाएगी ही नहीं।

'शंकाशील', वह मृत समान जीवन जीता है

यह शंका ही विनाश का कारण है। शंका ने ही मार दिया है लोगों को। शंका होने लगे तो शंका का 'एन्ड' नहीं आता। शंका का एन्ड नहीं आता, इसलिए मनुष्य खत्म हो जाता है।

स्त्रियों को शंका होती है, तब भी लगभग वे भूल जाती हैं। लेकिन यदि याद रह गई तो शंका ही उसे मार डालती है और पुरुष तो शंका नहीं हो रही हो, फिर भी उत्पन्न करते हैं। स्त्री शंका रखे, तब फिर वह डायन कहलाती है। यानी भूत और डायन दोनों चिपट गए। वे फिर मार ही डालते हैं मनुष्य को। मैं तो पूछ लेता हूँ कि किस-किस पर शंका होती है? घर में भी शंका होती है सब पर? अड़ोसी-पड़ोसी, भाई, पत्नी पर, सभी पर शंका होती है? तो फिर कहाँ

पर होती है? आप मुझे बताओ तो मैं आपका ठीक कर दूँ।

शंका करना वह भयंकर गुनाह है। यानी कि किसी भी चीज़ में शंका हो, तो वह शंका नहीं रखनी चाहिए। हमें जाग्रत रहना चाहिए, लेकिन सामने वाले पर शंका नहीं रखनी चाहिए। शंका हमें मार डालती है। सामने वाले का जो होना होगा, वह होगा लेकिन हमें तो वह शंका मार ही डालेगी। क्योंकि वह शंका तो मरते दम तक मनुष्य को नहीं छोड़ती। शंका होती है, तब मनुष्य का वज़न बढ़ता है क्या? मनुष्य जैसे मुर्दे की तरह जी रहा हो, ऐसा हो जाता है।

इस दुनिया में शंकाशील और मृत, दोनों एक सरीखे ही हैं। जिस व्यक्ति को सब पर शंका होती है वह शंकाशील। शंकाशील और मृत व्यक्ति, दोनों में फर्क नहीं है। वह मृत समान ही जीवन जीता है।

इस जगत् में, कभी भी किसी पर शंका नहीं करनी चाहिए। सही हो तब भी शंका नहीं करनी चाहिए। यह जगत् किसी भी जगह पर शंका करने योग्य है ही नहीं।

'शंका' से खड़ा है यह जगत्

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपका यह वाक्य बहुत ज़बरदस्त है। 'यह जगत् शंका करने योग्य नहीं है।'

दादाश्री : शंका से ही यह जगत् उत्पन्न हुआ है। शंका से, बैर से, कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनके आधार पर जगत् टिका है। किसी पर शंका करने के बजाय उसे दो थप्पड़ मार देना अच्छा है, लेकिन शंका मत करना। थप्पड़ मारोगे तो परिणाम आएगा न झट से! सामने वाला चार लगा देगा न! लेकिन शंका का परिणाम तो उसे खुद को ही, अकेले को ही! खुद गड्ढा खोदकर और अंदर उतर जाता है, वापस बाहर नहीं निकल पाता।

ये सभी पीड़ाएँ शंका में से उत्पन्न हुई हैं। आपको इस भाई पर शंका हो कि 'इस भाई ने ऐसा किया'। वह शंका ही आपको काट खाएगी। अब यदि कभी ऐसा किया भी हो और शंका हो जाए, तब भी हमें शंका से कहना है, 'हे शंका, तू चली जा अब। यह तो मेरा भाई है'।

ज्ञानी और ज्ञान बनाते हैं संपूर्ण नि:शंक

शंका किसी भी व्यक्ति पर, किसी भी चीज़ पर नहीं करनी चाहिए। शंका तो महादु:ख है। क्या? उसके जैसा कोई दु:ख है ही नहीं। आपका, भीतर वाला सब चलाने वाला है, फिर शंका क्यों करते हो? अत: किसी भी बात में अगर शंका नहीं करे तो उत्तम है। इस जगत् में किसी भी प्रकार की शंका न रखें उसके जैसा उत्तम व्यक्ति कोई नहीं है।

यह शंका निकाले कौन? अपना यह 'ज्ञान' तो संपूर्ण नि:शंक बनाए, ऐसा है। भीतर एक भी परमाणु नहीं हिले, उसे ज्ञान कहते हैं।

शंका तो आत्मा की शत्रु है। पूरा आत्मा फिंकवा दें। इसलिए जहाँ शंका पैदा हो, उसे तो जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। आत्मा प्राप्त होने के बाद, आत्मा में स्थित होने के बाद, ऐसी कौन सी चीज़ है जो हिला सके? इस संसार में ऐसा कौन सा तत्व है कि जो 'आपका खुद का' है, उसे छीन सके? शंका का कीड़ा तो भयंकर रोग है। पता भी नहीं चलता कि कब खड़ी हुई और कितना नुकसान कर गई। एक जन्म की हम गॉरन्टी देते हैं, कि 'व्यवस्थित' के नियम में कोई बदलाव होने वाला नहीं है। फिर शंका करने का रहा ही कहाँ? बिना ठौर-ठिकाने का संसार कि

जहाँ घर से निकला, तो फिर जब वापस घर लौटे तभी सही। ऐसे संसार में कहाँ शंका करनी और कहाँ शंका नहीं करनी? और जो हो रहा है, वह क्या पहले नहीं हुआ था? इसमें नया क्या है? इसकी फिल्म तो पहले ही बन चुकी है न? फिर उसमें क्या है? किसी के लिए भी शंका करने जैसा नहीं है। वहाँ ये लोग तो मोक्ष के बारे में शंका करते हैं, वीतराग पर शंका करते हैं! धर्म के लिए शंका करते हैं। अरे, कहीं का कहीं फेंका जाएगा यदि शंका की तो।

किसी भी प्रकार की शंका मत करना। मुझ पर छोड़ देना। जहाँ पर शंका होनी शुरू हुई वहाँ पर कहना कि यह दादा को सौंप दिया और आराम से सो जाना मेरा नाम लेकर। भाई, अच्छा गद्दा है, तकिया है, तो फिर सीधा रह न, सो जा चुपचाप। फिर भी शंका-कुशंका हो तो आकर हमें बता देना कि, 'दादाजी, मुझे इस तरह से शंकाएँ होती हैं'। मैं आपका समाधान कर दूँगा।

जय सच्चिदानंद

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और 11-30 से 12 शनि-रवि (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर सोमवार से गुरुवार शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST

UK

- **'MA TV'** पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य अडालज में सत्संग कार्यक्रम

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2023

24 मई (बुध)	सुबह 10-30 से 12	- आप्तपुत्र **सत्संग**
	शाम 4-30 से 7	- **प्रतिक्रमण (सं.) पुस्तक पर पारायण - प्रश्नोत्तरी**
25 मई (गुरु)	सुबह 10-30 से 12	- प्रश्नोत्तरी **सत्संग**
	शाम 5 से 8	- **ज्ञानविधि**
26 मई (शुक्र)	सुबह 10-30 से 12	- **सत्संग** (टोपिक - व्यवस्थित शक्ति)
	शाम 5-30 से 7	- **सत्संग** (टोपिक - फाईलों का समभाव से निकाल)
27 मई (शनि)	सुबह 10-30 से 12	- प्रश्नोत्तरी **सत्संग**
	शाम 5-30 से 7	- **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**
28 मई (रवि)	सुबह 10-30 से 12	- **शिविरार्थीओं के लिए पूज्यश्री के दर्शन**
	शाम 5-30 से 7	- **सत्संग** (टोपिक - 5 आज्ञा का महत्व)

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

पर्युषण पारायण - वर्ष 2023

12 से 19 सितम्बर : आप्तवाणी 14 भाग-3 पर सत्संग पारायण (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा)।

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती बुक पे वाचन होगा। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

अविवाहित युवकों के लिए ब्रह्मचर्य शिविर (दि. 2-4 जून 2023)

जो युवक आप्तपुत्रो द्वारा आयोजित ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र 21 से 30 के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम 1 साल हुआ होना जरूरी है। आपका रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए MBA office 9924343150 पर संपर्क करें।

'दादावाणी' के वार्षिक/5 साल के सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के अंतिम छः अंक की जांच करें। DGFT555/**08-28** यानी आपकी सदस्यता अगस्त-2028 को समाप्त हो रही है। दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

Pujya Deepakbhai's USA - CANADA Satsang Schedule - Year 2023

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
16/Jun	Fri	7:30 PM	9:00 PM	**Satsang**	**(New Jersey)** Delta Hotels by Marriott 7736 Adrienne Dr. Breinigsville, PA 18031
17/Jun	Sat	5:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	
18/Jun	Sun	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
18/Jun	Sun	5:00 PM	8:00 PM	**GnanVidhi**	
21/Jun	Wed	7:00 PM	8:30 PM	**Satsang**	**(Montreal, Canada)** Olympia Reception Halls 3855 Boul. Sainte-Jean A, Dollard-des-Ormeaux
22/Jun	Thu	10:00 AM	11:30 AM	**Aptaputra Satsang**	
22/Jun	Thu	5:30 PM	8:30 PM	**GnanVidhi**	
24/Jun	Sat	5.00 PM	7.30 PM	**Satsang**	**(Toronto, Canada)** Renaissance by the Creek 3045 Southcreek Rd, Mississauga, ON L4X 2X7
25/Jun	Sun	10.30 AM	12.00 PM	**Aptaputra Satsang**	
25/Jun	Sun	5:30 PM	8:30 PM	**GnanVidhi**	
28/Jun	Wed	5:30 PM	8:00 PM	**Satsang**	**(Tampa, FL)** India Cultural Center 5511 Lynn Road Tampa, FL 33624
29/Jun	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
29/Jun	Thu	5:00 PM	8:00 PM	**GnanVidhi**	
1/Jul	Sat	5:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(Guru Purnima - Dallas, TX)** Hilton Anatole 2201 N Stemmons Fwy Dallas, TX 75207
2/Jul	Sun	10:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
2/Jul	Sun	4:00 PM	7:00 PM	**GnanVidhi**	
3/Jul	Mon	8:00 AM	9:30 AM	**Pujan, Aarti, Message**	
3/Jul	Mon	10:00 AM	12:30 PM	**Gurupurnima Darshan**	
3/Jul	Mon	4:30 PM	7:00 PM	**Gurupurnima Darshan**	
4/Jul	Tue	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
4/Jul	Tue	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
5/Jul	Wed	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
5/Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
12/Jul	Wed	10:30 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	**(Houston, TX)** Gujarati Samaj Hall, Houston 9550 W Bellfort Ave, Houston TX 77031
12/Jul	Wed	5:30 PM	8:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
13/Jul	Thu	6:00 PM	8:00 PM	**Satsang**	
15/Jul	Sat	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	**(Chicago, IL)** Haridham Chicago Temple 540 Martingale Road Schaumburg, IL 60193
15/Jul	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**GnanVidhi**	
16/Jul	Sun	5:30 PM	7:00 PM	**Satsang**	
17/Jul	Mon	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	
20/Jul	Thu	7:30 PM	10:00 PM	**Satsang**	**(San Jose, CA)** Shubham 1214 Apollo Way, Suite 404B Sunnyvale,CA 94085
21/Jul	Fri	7:30 PM	10:00 PM	**Satsang**	
22/Jul	Sat	10:00 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
22/Jul	Sat	5:00 PM	8:00 PM	**GnanVidhi**	

मई 2023
वर्ष-18 अंक-7
अखंड क्रमांक - 211

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

शंका के सामने ज्ञान जागृति

अब, इस 'ज्ञान' के बाद शंका हो तो उस समय आपको देखते रहना है, जो शंका होती है उसे। शंका के लिए आपको कोई प्रतिभाव नहीं देना है। आपको देखते रहना है कि 'ओहो, चंदूभाई को शंका हुई है!' और जब शंका होती है, तब वह संताप में ही होता है। भयंकर दुःखी होता है, अपार दुःख होते हैं उसे। क्योंकि भगवान ने कहा है, कि शंका वही सब से बड़ा गुनाह है। वह शंका उसे तुरंत ही दुःख देती है। वह शंका जब सामने वाले को दुःख देगी तब देगी, लेकिन खुद को भी भयंकर दुःख देती है। और प्रतिभाव करने से तो शंका का दुःख बढ़ जाता है। यानी शंका के समय तो आपको जागृति रखकर अलग रहना है। अभी भी जिस बाबत में उलझन होती है, वह तो पहले की प्रेक्टिस है न, वह जाती नहीं। छूटती नहीं है वह। बाकी, अब शंका की जरूरत ही नहीं है। आप प्रकृति से अलग हो जाओ तो शंका अपने आप ही बिखर जाएगी।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.